R.N.I.- UP-HIN/2001/3996
ISSN- 2581-6128

स्थापन दिवस के 23वें वर्ष में प्रवेश

संयम • संस्कार • सन्तुलन

शहर समता

(हिंदी साप्ताहिक)

शोध पत्र

www.shaharsamta.com

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव
सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

डॉ रतन कुमारी वर्मा पर केंद्रित विशेषांक

वर्ष 23 अंक 26 रविवार, इलाहाबाद, 19 नवंबर 2023 पृष्ठ 8 विशेषांक मूल्यः 5 रू0

संपादकीय

इस बार डॉ रतन कुमारी वर्मा

जब रतन कुमारी वर्मा कहती हैं -
'हार-उपहार का संभाव जिंदगी,
लोभ-मोह का अभाव जिंदगी।
दुख, परिताप का प्रभाव जिंदगी,
स्नेह-सौहार्द का सद्भाव जिंदगी।'
तो लगता है जीवन की,
सच्चाई को खूब परखा है ।
देख-दाख के जीवन को
खूब अरखा है।
बात पते की कहती हैं वह कविता में ,
कथा-कहानी, लेख वगैरह लिखती हैं।

अध्यापन है कार्य बड़ा ही सुखदाई।
कहती है बच्चों से हरदम हरसायी।
पढ़ो लिखो और नाम करो इस दुनिया में।
केवल यही कमाई मात्र रह जाती,
बाकी जीवन आपाधापी में कटता।

तो बात डॉक्टर रतन कुमारी वर्मा की हो रही है। सहज, सरल और मृदभाषी डॉक्टर रतन कुमारी वर्मा ने जीवन के यथार्थ को बड़ी बारीकी से देखा, समझा और जिया है।

'संघर्षों का नाम सदा ही जीवन है,
इसके बल पर तपता है इंसान सदा ।
तभी निखर कर आता उसका वह पल सब,
जैसे आभूषण के पहले तपता सोना है।'

अंबेडकर नगर जिले के करीमपट्टी में जन्मी डॉक्टर रतन कुमारी वर्मा का अब कर्म क्षेत्र इलाहाबाद है। कई पुस्तकों की लेखिका डॉक्टर रतन कुमारी वर्मा ने अनेक पुस्तकों का संपादन भी किया है। जीवन पथ पर अपनी रचनात्मक ऊर्जा को सहेज कर हिंदी साहित्य को समृद्ध करने वाली डॉक्टर रतन कुमारी वर्मा की कहानियां समाज के विविध दृष्टिकोण को उजागर करती है। कहानी कहने की कला है। अपने आस-पास बिखरे सरोकारों से कथ्य निकालकर उसे कहानी के रूप में ढालना और प्रस्तुतीकरण में नया रूप दे देना - जो मन को आल्हादित कर जाए - वही तो कहानी है।

शहर समता के इस 8पेजी विशेषांक में जितना संभव हो सका , उतना डॉक्टर रतन कुमारी वर्मा के रचना संसार को रखा गया है। अब आप सब अवलोकन करें और बताएं कि डॉक्टर रतन कुमारी वर्मा अपने रचना संसार को लेकर साहित्य के किस मुकाम पर हैं। यह निर्णय आप पर है। विशेषांक कैसा लगा प्रतिक्रिया अवश्य दें।

अंत में -

लिखा बहुत कुछ आपने, हिंदी की पहचान।
ऐसा ही लिखती रहें, होवें आप महान।

उमेश श्रीवास्तव

मेरा लेखकीय संघर्ष

हमारी प्रारम्भिक शिक्षा ग्राम - करीमपट्टी, जिला - फैजाबाद (वर्तमान में अम्बेडकर नगर) के प्राथमिक विद्यालय से हुई । माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए छात्रावास में रहकर अध्ययन करने का अवसर मिला । सन् १९८१ में जब मैं कक्षा ग्यारहवीं में अध्ययनरत थी, तब महादेवी वर्मा , पंत, निराला, जयशंकर प्रसाद की कविताएँ अच्छी लगने लगी थीं। मुंशी प्रेमचंद की कहानियाँ समाज को समझने की बेचैनी पैदा कर रही थीं।तब मन में विचार आने लगा था कि आगे चलकर मैं क्या बन पाऊंगी ?

जिस तरह के ग्रामीण परिवेश में पल - बढ़ रही थी, सामाजिक वर्जनाएं चुनौतियों की तरह सामने आती जा रही थीं, ऐसे में शिक्षा ही एक मात्र माध्यम था, जो आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर रहा था।इन सब में सबसे बड़ा सौभाग्य यह मिला कि माता- पिता दोनों शिक्षक थे। विशेष रूप से माता जी स्मृति शेष श्रीमती शान्ति वर्मा, जो प्राथमिक विद्यालय में सहायक अध्यापिका के रूप में शिक्षण कार्य कर रहीं थीं।हम सभी भाई - बहनों की शिक्षा के प्रति बहुत सचेष्ट थीं। पिता जी श्री विद्यासागर वर्मा का सदैव वरदहस्त प्राप्त था, जो निरन्तर हम सभी की आवश्यकतायें पूरी किया करते रहे।हम सभी को पढ़ने के लिए सदैव प्रेरित करते रहे।हम लोगों की शिक्षा में हमारे मामा जी स्मृतिशेष श्री राम पियारे वर्मा जी का विशेष योगदान रहा। उनके समर्पण, सक्रिय सहयोग, असीम स्नेह के कारण हम तीनों बड़ी बहनों की माध्यमिक स्तर एवं स्नातक स्तर की शिक्षा सम्पन्न हो पायी। परास्नातक की शिक्षा के समय ही पिता जी ने वैवाहिक कार्य क्रम सम्पन्न कर दिया। पिता जी की सूझबूझ एवं दूर दृष्टि का परिणाम रहा कि उच्च शिक्षा प्राप्त करने के मार्ग में कोई बाधा नहीं आयी।शोधकार्य करने का भी अवसर मिला। ।

नब्बे के दशक तक कथा साहित्य में विपुल मात्रा में लेखिकाओं का पदार्पण हो चुका था। गुरूवर प्रोफेसर महेंद्र कुमार जैन के निर्देशन में महिलाओं के कथा साहित्य पर शोध कार्य सम्पन्न किया। कथा साहित्य के पठन पाठन से समझ का कुछ विस्तार हुआ और अपनी अनुभूतियों को लिखने की इच्छा और जिज्ञासा प्रबल होती गयी परन्तु पारिवारिक जिम्मेदारियों में उलझी रही और मन की गुत्थियों को सुलझाने का अवसर नहीं निकाल पा रही थी।

सन् १९९६ में जगत तारन गर्ल्स डिग्री कालेज में प्रवक्ता - हिन्दी के पद पर नियुक्ति मिल गई। यह हमारे लिए परम सौभाग्य की बात थी किन्तु तब भी नौकरी के कार्य तक ही सीमित रह गई। हाँ, एक अच्छा कार्य यह हुआ कि यहाँ आने से शहर के मूर्धन्य विद्वानों का वरद हस्त सदैव प्राप्त होता रहा। उनसे साहित्य की समझ और लिखने की प्रेरणा मिलती रही। परन्तु अपनी रचनाओं को प्रकाशित करवाने के प्रति सचेष्ट नहीं हो पा रही थी। महाविद्यालय में विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय कार्य क्रमों के आयोजन तथा शहर में आयोजित होने वाले विभिन्न साहित्यिक कार्य क्रमों में शामिल होते रहने के कारण वरिष्ठ साहित्यकारों का सान्निध्य प्राप्त होता रहा।हमारा परम सौभाग्य है कि इलाहाबाद में आकर बहुत से वरिष्ठ और विशिष्ट विद्वानों से मिलने का अवसर मिला , जिनमें विशेष रूप से उल्लेखनीय प्रतिष्ठित विद्वान हैं -प्रोफेसर गिरीश रस्तोगी, उपन्यासकार मैत्रेयी पुष्पा, निर्मला पुतुल, अनीता देवी, चित्रा मुद्गल, कंवल भारती, डा जयप्रकाश कर्दम, प्रोफेसर श्यौराज सिंह बेचैन, प्रोफेसर चौथीराम यादव, प्रोफेसर सदानंद साही, वरिष्ठ आलोचक नामवर सिंह, प्रोफेसर अवधेश प्रधान, प्रोफेसर राजीव रंजन सिन्हा, जनकवि जयप्रकाश, सुषमा शर्मा, डा रामदरश मिश्र, प्रोफेसर विश्व नाथ तिवारी, राजभाषा अधिकारी डा शैलेश शुक्ला, प्रोफेसर खगेन्द्र ठाकुर, डा रामचन्द्र, कुमार वीरेंद्र , श्री गोपाल रंजन , श्री अवनीश यादव, डा. सी.एल. सोनकर आदि विद्वानों के सानिध्य में साहित्यिक कार्य क्रमों में निरन्तर प्रतिभागिता से सदैव ज्ञानवर्धन होता रहा, जिससे लिखने की चेष्टा सदैव बनी रही।ज्ञान पीठ पुरस्कार से सम्मानित अमरकांत , प्रोफ़ेसर आशा शुक्ला , (वी सी) ,प्रोफ़ेसर सोमा बंदोपाध्याय ,(वी सी) ,प्रोफेसर विनोद प्रकाश मिश्र), वी सी) , प्रोफेसर श्री प्रकाशमणि त्रिपाठी (वी सी),वरिष्ठ कथाकार मार्कण्डेय, शेखर जोशी, वरिष्ठ आलोचक प्रोफेसर राजेन्द्र कुमार, प्रोफेसर सत्य प्रकाश मिश्र, प्रो। रामस्वरूप चतुर्वेदी, वरिष्ठ कवि कैलाश गौतम, हरीश चन्द्र पाण्डे, अजामिल, प्रो। अनिता गोपेश, प्रोफेसर हेरम्ब चतुर्वेदी, दूधनाथ सिंह, ममता कालिया, रवींद्र कालिया, ऐतिहासिक उपन्यासकार श्री मेवाराम, डा रविनन्दन सिंह, श्री हीरा लाल, डा राम सेवक, श्री राम मिश्र तलब जौनपुरी, शैलैन्द्र मधुर, विवेक सत्यांशु, डा धनन्जय चोपड़ा, प्रोफेसर रामकिशोर शर्मा, प्रोफेसर संतोष भदौरिया, प्रोफ़ेसर एस पी शुक्ल, प्रोफ़ेसर योगेंद्र प्रताप सिंह आदि विद्वानों के साथ अनेक बार साहित्यिक कार्य क्रमों के आयोजन का अवसर प्राप्त हुआ। अनेक पत्र पत्रिकाओं का भी निरन्तर अध्ययन करती रही। विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में भाग लेती रही।

कवयित्री की कलम से

संयोग की बात है कि एक बार इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में एक संगोष्ठी में मैंने वक्तव्य दिया।उस समय प्रोफेसर सत्य प्रकाश मिश्र जी थे। बात उन दिनों की है। हमारे वक्तव्य को सभागार में उपस्थित बहुत से लोगों ने ध्यान पूर्वक सुना। इसका एहसास हमें तब हुआ, जब संगोष्ठी सम्पन्न हो गई और हम लोग अपने घर की तरफ चलने लगे। काफी विद्यार्थियों एवं कुछ विद्वानों ने बाहर निकलते ही प्रश्न आकुलता से घेर लिया। उनमें से एक विवेक सत्यांशु

...शेष पृष्ठ 7 पर

डॉ रतन कुमारी वर्मा की कविताएं

सत्य का संघर्ष

जब प्रशासक के सामने
कोई सत्यवादी
अपने अनुभव के सत्य
बटोरकर खड़ा होता है
तो बाकी सहकर्मी
चुपचाप प्रशासक के
साथ हो लेते हैं
कि सत्यवादी सनकी है,
पागल है।
नहीं है उसके पास
जमाने की सीख
कैसे प्रशासक को
खुश किया जाता है
कब उसकी हां मे हां मिलाकर
कब उसकी गलतियों पर
चुप रहकर
और तो और
अगर कोई सहकर्मी
प्रशासक की यातना से
आहत होकर
अपनी वेदना का
वर्णन कर रहा हो
तो भी कैसे मौन रहकर
प्रशासक की ही तरफदारी
की जाती है।
उत्कृष्ट उपहार देकर
लक्ष्मी को
बन्द लिफाफे में समर्पित कर
कैसे प्रशासक की
लक्ष्मी को प्रसन्न किया जाता है।
सहकर्मी की पीड़ा अपनी पीड़ा होते हुए भी
उससे दूर
प्रशासक की चापलूसी में
हम अपने को झोंक देते हैं।
नहीं जानते, नहीं मानते
कि एक दिन यह सच
हमसे भी टकरायेगा।
और जानते हुए भी यह सोचकर
मुँह मोड़ लेते हैं
जब हमारी बारी आयेगी
तो देखा जायेगा।
लेकिन भला शुतुरमुर्ग
कब तक भयभीत होकर
अपनी चोंच बालू में छिपायेगा।
जब भी चोंच उठायेगा
वही रेत ही रेत नजर आयेगी।
यही स्थिति है
हर कर्मचारी की
अपने प्रशासक तले
हर सहकर्मी हमेशा
साथ देता आया है
प्रशासक का
इस लालच में
कि प्रशासक हमारा साथ देगा
हमको लाभ पहुँचायेगा।
उसकी तरफ
आशाभरी दृष्टि से
हमेशा निहारता रहता है
उसकी आँखों से
बेचारगी टपकती रहती है
भ्रम में खोया रहता है
स्वार्थ लिप्सा में आँखें
देखने नहीं देती हैं।
मन की आँख
कमजोर पड़ जाती है
पर जब
खुद एक दिन
प्रशासक के समक्ष
सत्य से रूबरू होना पड़ता है
तब सत्यवादी की
पीड़ा की अनुभूति होती है
बारी सबकी आती है
पर प्रशासक की सुविधा से
क्योंकि प्रशासक
इसीलिए तो प्रशासक है।
वह जानता है, इसीलिए
एक साथ सबसे नहीं टकरायेगा
एक साथ टकरायेगा
तो चूर-चूर हो जायेगा
भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र
''संघौ शक्ति कलौयुगे''
का सदा वह ध्यान
रखता आया है
इसीलिए
एक-एक किस्त में
एक-एक से भिड़ता है
और बारी-बारी से
सबकी बखिया उधेड़ता है
तब हम हर तरफ
सत्य का संघर्ष सुनते हैं।
कानाफूसी तो करते है
पर कहने का साहस
जुटा नहीं पाते हैं
सिसक-सिसक कर
रोने वालों की संख्या
सबसे ज्यादा है
आहें भरने वाले भी बहुत हैं
पर सब कुछ जानकर भी
भोगकर भी
सुविधा की मृगतृष्णा में
सच का साथ देने का
माद्दा रखने वाले बहुत कम हैं।
पर अकेला चना भाड़ फोड़ने वालों की
कमी नहीं है
धरती खाली नहीं है
और जब
प्रशासक से त्रस्त होकर
सत्य की आँच से पककर
सब एक हो जाते हैं
तो क्रांति की ज्वाला
धधक उठती है
सब सच प्रशासक के समक्ष
उगल कर रख देती है
और प्रशासक
हाथ उपर कर खड़ा हो जाता है
बोलता है-
आखिर हम भी तो इंसान हैं
भगवान समझने की भूल
तो आप लोगों ने की है
आप लोगों ने
जब तक भगवान बनाया
तब तक भगवान बना रहा
और जब अपने बीच खींच लिया
तो वहीं पर आ गया
सत्य के संघर्ष से अवगत कराया
तो अब मुझे भी समझ में आया
कि मैंने कितने सत्य को सताया।
पर सत्य को सताना
शासक की मजबूरी है
सबको शासन में रखने के लिए
यह सब जरूरी है।
इसीलिए शासक और शासित के बीच
सदा संघर्ष होता आया है
जब तक शासक फूट डालने में
सफल रहता है
तब तक वह शासन करता है
जब जनता एकत्रित हो जाती है
तब उसका शासन चलता है
जब उसकी बात सुनी जाने लगती है
तब सत्य हाथ उठाये, बाँहे फैलाये
चलता हुआ नजर आने लगता है
आखिर में सत्य की जीत
निश्चित रूप से होती है।

स्नेह रिक्तता

जन-मानस छटपटा रहा है,
सब कुछ अटपटा लग रहा है।
जाने कैसी है उदासी जग में,
कोई भी समझ न पाये मन में।
अपने भी अपने नहीं लगते,
पराये कैसे अपने लगेंगे,
वे कैसे हमको अपनायेंगे ?
जब अपनों से अपनों की
अनुभूति नहीं मिलती,
तब जिन्दगी भी
कुछ खोई-खोई सी लगती,
यह सब क्यों ?
क्योंकि जिन्दगी के मायने बदल गये हैं
भारतीय संस्कृति से दूर हो रहे हैं
पाश्चात्य की आँधी में बह रहे हैं
लोग स्वतंत्रता की आड़ में
स्वच्छन्दता की हद पार कर रहे हैं।
जितना हद पार किये हैं
उतना ही अपनों से दूर हो रहे हैं
भौतिकता के मद में चूर हो गये हैं।
अब उनके पास सब सुविधाएं हैं
उनके आस-पास अब कोई नहीं बाधाएं हैं।
अब है उनके पास
अच्छा बंगला, लग्जरी गाड़ी
पर अब उनके पास
एक ही चीज नहीं हैं
स्पन्दित भावना की नाड़ी।
जो अपनों को अपनों की अनुभूति दे सके
प्रिवार में सतत स्नेह-दीप को जला सके
परायों को भी अपना बना सके
सबके स्पन्दित हृदय का
स्पन्दन बन सके बेसहारा,
बेबस के जीवन में
आस भर सके
समृद्धि और सम्पन्नता में
जीवन की सांस बन सके।

अजन्मा की पुकार

उदस्थ अजन्मा कर रही है
पुकार माँ तेरी कोख में पल रही है
एक कन्या उदार।
माँ ले लो प्रकृति का अनुपम उपहार
जन्म देने से मुझको करो न इन्कार
जन्म देकर कर दो मेरा उध्दार
मैं भी बनूँगी सृष्टि का खेवनहार।
सृष्टि की यह रचना अनमोल है
नर के संग नारी का
अद्भुत मेल-जोल है
सृष्टि के इन दोनों तत्वों का
है सम महत्त्व
एक-दूसरे के बिना
इनका नहीं है कोई सत्व।
माँ यदि एक का आगमन
पथ खोल दोगी
और एक का आगमन पथ
कर दोगी बन्द
तो सृष्टि का निरन्तर विकास ही
शनैरू शनैरू हो जायेगा बन्द।
मेरा निर्माण कर लोगों को
नसीहत सिखलाओ
मुझे जन्म देकर माँ जग में
मिसाल बन जाओ।
तुम्हें देखकर और माताओं के भी
बढ़ेंगे हौंसले
मुझ सरीखे अन्य बेटियों के भी
अरमान होंगे पूरे।
माँ अगर मानती हो संसार का
रचयिता है ईश्वर
तो मान लो मेरी माँ बनाया है
उसी ने हम सबको
अपने हाथ में यह हथियार मत लो
एक को जन्म दो एक को कर दो अवरूदध्द।
माँ हमको भी जन्म दे दोए कर दो उध्दार
माँ तेरी कोख में पल रही है
एक कन्या उदार।
सीखों कीट-पतंगों से वे कैसे स्नेह करते हैं
लिंग के आधार पर वे भेदभाव नहीं करते है
संग-संग उड़ते हैं संग मर जाते हैं
जाते-जाते भी मनुष्यों को
पथ दिखला जाते हैं।
फिर भी मनुष्य हुआ जाता है अन्धा
रहता है निरन्तर वह अन्धमोह में भटकता।
पुत्र जन्म लेगा जीवन धन्य हो जायेगा
पुत्री जन्म लेगी जीवन नर्क हो जायेगा।
पर कितने पुत्रों ने तारा है मातृ-पितृ को
उगलियों पर गिनो तो पुत्रियाँ नहीं है पीछे
बात है समझने की विचार करने की
सन्तान तो सन्तान है
चाहे वह पुत्र हो या पुत्री।
आज तक इसका
कोई पैमाना नहीं बन पाया है
क्योंकि अन्ततरू सब ईश्वर की रचना है
जो अच्छा इंसान होता है
वह तारता है सबको
जिसमें इंसानियत नहीं
वह कष्ट देता है सबको।

अधिकारी अपंग हैं

अधिकारी बहुत गहरे हैं
इसलिए बहुत बहरे हैं
उनकी जुबान खुल सकती नहीं
भ्रष्टाचार के खिलाफ कलम चल सकती नहीं
उनके कलम में वह ताकत नहीं
जो भ्रष्टाचारियों को
दिखा सके औकात सही
भ्रष्टाचारियों को संरक्षण
प्राप्त है माफियाओं का
उनकी साठ-गाँठ बहुत अच्छी है
फेवीकोल के जोड़ से भी पक्की है
इसलिए अधिकारी कलम चलाते नहीं
जो कलम चलाते हैए वो चलते ही रहते हैं
अधिकारी की बुध्दि बहुत उच्च है।
देखने की दृष्टि बहुत सूक्ष्म है
किसी भी विभाग में पहुँचते ही
वहाँ का मजमून भाँप लेते हैं
भ्रष्टाचार के रोग की जड़ पर
जैसे ही कुठारघात करने की सोचते हैं
उसके लिए जाँच का आदेश देते है
निश्चित अवधि में रिपोर्ट माँगते हैं
नियमानुसार कार्यवाही करने को
आगे बढ़ते हैं
भ्रष्टाचार की एक जड़ को
खत्म करना चाहते हैं
तब तक उनके ही
खिलाफ कार्यवाही हो जाती है
रिपोर्ट आने से पहले
उनका ही तबादला कर दिया जाता है
कही जान से मारकर ही
खत्म कर दिया जाता है
फिर लड़ाई का रूख बदल जाता है
जहाँ चला था वह न्याय दिलाने
भ्रष्टाचार के दंश को मिटाने
वहीं पर खुद मिट जाता है
अन्याय का शिकार हो जाता है
परिवार दर-दर भटकता है
बूढ़े माँ-बाप बिलखते हैं
अपने लाल के लिए तरसते हैं
बेटे के कन्धे पर
इस दुनिया से जाने का
सपना लिए
अपने ही कन्धों पर
बेटे की लाश को ढोते हैं
बहुत मजबूर होते हैं
दूसरों को नसीहत देते हैं
बेटा व्यवस्था से टकराना नहीं
उसी से काम चलाना
नहीं तो तुम्हारी भी यही दशा होगी
फिर जरा सोचो
भारतवंशियों
भारत की क्या दशा होगी
भारत माँ के बुध्दिमान बेटे
यदि इसी तरह अपंग होते रहे
तो भारत माँ कितनी अपंग हो जायेगी
अधिकारियों की न कलम चल सकती है
अधिकारियों की न बुध्दि चल सकती हैं
इसलिए आँखों ने देखना बन्द कर दिया है
अंग होते हुए भी
अधिकारी
अब अपंग हो गए हैं।

अपेक्षा

धरती पर जब आँख खुली
मेरे रोने की आवाज पर
माँ की ममता उमड़ पड़ी
अपनी प्रसव पीड़ा से बेपरवाह
माँ मेरी हित चिन्ता में लग गयीं
पेट की क्षुधा जब शान्त हुई
तब मैं आनन्द निमग्न हो जाने कब सो गई
जब मैं चन्दा मामा को पहचानने लगीं
तब चन्दा मामा को ही
पाने की जिद करने लगीं
माँए आँगन की थाली में
चन्दा मामा को पकड़ाने लगी
पकड़ने के जाल में उलझी-उलझी
जाने कब भूल गई
पर जिद पूरी होती रही
पर जब मेरे घर में
भैया ने जन्म लिया
मानों कृष्ण-कन्हैंया आये
सब उससे ही अनुरंजन करने लगे
बस तब से सबने
मेरी तरफ देखना छोड़ दिया
कन्हैया-नन्दन के आनन्द में
सबने मेरी तरफ मुखातिब होना छोड़ दिया
कभी कोई मुखातिब होता भी था तो बड़े
बेमन से
बहुत ईर्ष्या होती थी
न जाने कितनी बार बड़बड़ायी
मन ही मन बुदबुदायी
जब नहीं सहा गया
तब चीख-चीख कर चिल्लायी
पर किसी ने नही सुनी मेरी पुकार
जब जीवन में और आगे बढ़ी
तब हर जगह और बढ़ा संघर्ष
जीवन में संघर्ष का दायरा बढ़ता गया
सोचा हार नहीं मानूँगी
जीवन में संघर्ष करूँगी
एक दिन निश्चित ही हमारी जीत होगी
कैसे नहीं सुनेगा कोई मेरी बात
पर धीरे-धीरे
दुनिया की दुनियादारी
समझ में आने लगी
कोई किसी से खुश क्यों होता हैघ्
और किसी की क्यों होती है उपेक्षा
कोई किसी को अनदेखा क्यों करता हैघ्
जब जिसका जिससे
मतलब नही सधता है
बस वही से उसकी
शुरू हो जाती है उपेक्षा
या दिमाग में यह बैठ जाता है
कि यह हमारे काम नहीं आयेगा
दुनिया में उपेक्षित होने का
राज तब समझ में आया
तब उपेक्षा से ही होने लगा लगाव
उपेक्षा तो हर क्षण की साथी है
अपेक्षा तो हर बार दूर निकल जाती है
क्योंकि अपेक्षा की अपेक्षा
पूरा होना है बहुत मुश्किल
अधिकांश माँ-बाप को अपनी अपेक्षा
पुत्र में ही नजर आती है
इसी आस में उनकी जिन्दगी कट जाती है
लेकिन जिन्दगी में जब जरुरत पड़ती है
तब असलियत सामने नजर आती है
यह समझना बहुत मुश्किल है
अपेक्षा किससे पूरी होती है
कहीं अपेक्षा पुत्र से पूरी होती है
तो कहीं अपेक्षा पुत्री से भी पूरी होती है
भगवान ने जिसको अच्छा इंसान बनाया
होता है
उसी से माँ-बाप की अपेक्षा पूरी होती है
उसी से समाज की अपेक्षा पूरी होती है।

कल्पना

मन ही मन में
जिसे मैं अपनी बहू
बनाने की सोच रही थीए
बहू बनाने की सोच में
मैं यह न सोच सकी थी
कि बहू बनने वाली
अपने मन में क्या सोच रही है घ्
उसके मन में क्या अरमान है घ्
क्या ख्वाब बुन रही है घ्
किन ख्यालों में जी रही है घ्
किन हकीकतों से लड़ रही है घ्
बहुत लोगों ने
मेरे सामने
यह प्रस्ताव भी रखा
कल्पना बहुत अच्छी लड़की है
देखने में सुन्दर है
उसकी लम्बाई तो उसको और खूबसूरत
बना देती है
उसकी सुन्दर देहयष्टि
मानों विधाता ने फुरसत में बनाई है।
उसके रुप-लावण्य के सामने
बड़ी-बड़ी सिने तारिकायें भी फीकी हैं
क्योंकि उसके बोलने का अंदाज
स्मित मुस्कान
चलने का ढंग
पहनने-ओढ़ने का सलीका
सारे भारतीय संस्कृति के गुण
उसके व्यक्तित्व में समाये हैंए
जिससे आकर्षित हो होकर सब
अपनी बहू बनाने की साध
अपने मन में बसाये हैं।
पर जब एक दिन पर्दा उठा
उसकी जिन्दगानी का
पता चला
वह दर्द की जीती हुई चिंगारी है
प्यारे अपने लाड़ले ष्शिवांशष् की पुजारी है।
प्यारे अपने शिवांश को पाने के लिए
जिन्दगी की सारी लड़ाई लड़ी
और न्यायालय में जब
मातृत्व शक्ति की जीत हुई
तो गर्व से तनकर खड़ी हुई
मस्तक ऊँचा हुआ
उसका प्यारा शिवांश उसको मिल गया
क्षण भर को सब भूल गई
सारी जद्दोजहद
सारा दर्दए थकान
और उठ खड़ी हुई
प्यारे शिवांश को लेकर आगे बढ़ने के लिए
कुछ कदम चल भी न पाई थी
कि शिवांश की जघन्य हत्या हो गई
उसकी हत्या क्यों हुई घ्
कैसे हुई घ्
यह यक्ष प्रश्न है निरन्तर उसके मन में
गूँजता
हृदय को है बार-बार बेंधता
मन को रह-रह कर है कुरेदता
वह समझ नहीं पाती है
विधाता ने उसे यह दण्ड क्यों दिया घ्
अट्ठाइस वर्ष की युवती कल्पना
उसके संघर्ष की हकीकत जब पता चली
तो मानों लोगों के पैरों तले जमीन खिसक
गई
जिसको देखकर
सब अपने मन में
अपने-अपने ढंग से हैं सोचते
वह तो रोज लड़ रही है समाज से
समाज की सच्चाइयों से
स्त्री-जीवन की विसंगतियों से
और आगे बढ़ रही है
दर्द भरी स्मित मुस्कान के साथ
न्यायालय में तो वह जीत गई
पर समाज में वह हार गई
पर समाज में ही
फिर तलाश रही है
अपना मुकाम
अपने जीने का एक बहाना ढूँढना चाहती है
नन्हे शिवांश को लेकर
एक संसार रचना चाहती है
जिनके बीच में
वह खिल-खिलाकर हँस सके
किसी शिशु मन्दिर के आँगन में शिक्षिका
बन
हाथ में प्रेम की वीणा लिये हुए
नन्हें शिवाशों को अपना बनाने के लिए
उनकी तोतली बोली में शिवांश की गूँज सुनने
के लिए
उन्हीं के बीच में जीवन जीने के लिए
और उनमें भर देना चाहती हैं-
भारतीय संस्कार।

गिरती भाषा गिरता स्तर

भाषा के क्षेत्र में हो रहा है
अजब गजब का खेल
माननीय लोग बोल रहे है
नित नये-नये बोल।
कोई किसी को 'पप्पू' कहने में
अपनी शान समझता है
कोई किसी को 'फेकूँ' कहकर ईंट का
जवाब पत्थर से देता है।
कोई 'मनमोहन' को
'मौन मोहन' कहकर तंज कसता है
कोई 'मोदी' को
'मौत का सौदागर' घोषित करता है।
कोई सत्ताधारी को कायरए हिटलरए
मनोरोगी बताता है
कोई कहने वाले को 'पागल' कहकर अपना
बड़प्पन दिखाता है।
कोई शासक दल के
अध्यक्ष को 'हत्यारा' कहता है
कोई विपक्षी दल के
अध्यक्ष को कायरए डरपोक बताता है।
अब बड़े-बड़े नेता
एक-दूसरे पर कीचड़ उछालते हैं
भ्रष्ट, बेईमान, चोर, डाकू की
उपाधियाँ मुफ्त बाँटते हैं।

डॉ रतन कुमारी वर्मा की कविताएं

कुछ गिने-चुने नेता
बेदाग दामन की बात करते हैं
जैसे आडवानी बेदाग होकर
निकले थे वैसे ही जेटली भी निकलेंगे।
कोई कहता है
नई-नई आम आदमी पार्टी
सिर चढ़ गई है
ईमानदारी का सर्टिफिकेट बाँटने की
जिम्मेदारी अकेले ले रखी है।
कोई कहता है हम पुराने ईमानदार है,
हमारी ईमानदारी पुश्तैनी है
हम पर कभी कोई दाग नहीं लगाए हम
हमेशा बेदाग होकर निकले
जब भी हम सत्ता में रहेए हमारे ऊपर
भ्रष्टाचार का आरोप लगा
हमने फौरन कमीशन बैठा दिया,
जाँच शुरू हो गई।
जाँच इतनी धीमी गति से
शुरू हुई कि कुछ दिन बाद जनता भूल गई।
विपक्ष में रहे तो मैटर घसीट कर
जनता के दरबार में ले गये।
अगले चुनाव में
हम भारी मतों से
विजयी होकर निकले।
सत्ता पर आसीन हो गये,
सभी दागएधब्बे अपने आप छूट गये।
फिर हमने अपनी
जादुई भाषा का
शस्त्र चलाना शुरु कर दिया।
सामने वाले ने भी
हमें हमारी भाषा में
उत्तर देना शुरु कर दिया।
इस तरह हम भाषा-
भाषा का नित नया-नया
खेल खेलते रहे।
एक-दूसरे के लिए अनाप-सनाप भाषा का
प्रयोग करते रहे।
एक-दूसरे को नीचा दिखाने का सदा
कुत्सित प्रयास करते रहे।
नीचे दिखाने का प्रयास करते-करते हम
खुद गिरते चले गये।
नीचा दिखाने के लिए नित नया-नया
विशेषण गढ़ते रहे।
गिरती हुई भाषा का गिरता हुआ
पैमाना बनते चले गए।

ग्राम देवता

शहरों में बड़े-बड़े
भव्य मंदिर होते हैं
वहाँ सुन्दर-सुन्दर सजी हुई
आकर्षक मूर्तियाँ होती हैं।
किसी मंदिर में गणेश जी
शंकर पार्वती के साथ सुशोभित होते हैं
किसी मंदिर में रामचन्द्र जी
सीता माता और लक्ष्मण के
साथ सुशोभित होते है
किसी मंदिर में रामभक्त हनुमान जी
गदा लिये हुए अकेले ही विराजमान होते हैं
किसी मंदिर में शंकर जी
शिवलिंग के रूप में
अकेले ही शोभायमान होते हैं
किसी मंदिर में कृष्ण भगवान
राधा के साथ विराजमान होते हैं
किसी मंदिर की शोभा
शक्ति की अधिष्ठात्री देवी दुर्गामाता होती है
किसी मंदिर की शोभा
धन सम्पदा की देवी लक्ष्मी माता होती हैं
विद्या मंदिर की शोभा
विद्या की देवी सरस्वती होती हैं
कल्याणी देवीए अलोपी माताए शीतलामाता
विभिन्न मंदिरों में शोभायमान होती हैं।
वैष्णव माताए कामाख्या देवीए मैंहर देवी
पहाड़ों पर शोभा पाती हैं।
बड़े-बड़े घंटए घड़ियालए पुजारी
दिनरात उनकी सेवा में रत रहते हैं।
फूल-मालाए मिठाई का ढेर सारा प्रसाद
निरन्तर वहाँ चढ़ता रहता है।
सोना-चाँदीए हीरा-जवाहरात
चढ़ावें में चढ़ता रहता है
भजन-कीर्तन आठो याम
निरन्तर होता रहता है
परन्तु
गाँव में बड़े-बड़े
भव्य मंदिर नहीं होते हैं।
वहाँ सुन्दर-सुन्दर सजी हुई
आकर्षक मूर्तियाँ नहीं होती हैं
प्रत्येक गाँव में ग्राम देवता का
एक निश्चित स्थान होता है
गाँव में सबसे अधिक पूज्य देवी देवता हैं
कालीमाई, गंगामैया,
शीतलामाता, तुलसीमाता
ड्यूहारे बाबा, डीह बाबा,
शनीचर देवता
कालीमाई का थान और
नीम के पेड़ का सम्बन्ध अटूट है
नीम के पेड़ में कालीमाई वास करती हैं
शीतलामाता भी नीम के
पेड़ में ही वास करती हैं
गाँव के सबसे ऊँचे डीह पर
ड्यूहारे बाबा रहते हैं
पीपल के पेड़ में
शनीचर देवता का वास माना जाता है
साढ़े-साती के कष्टों से
बचने के लिए लोग
शनिवार को पीपल के
पेड़ में जल चढ़ाते हैं
तुलसी के पेड़ में तुलसीमाता रहती हैं
नित्य स्नान के बाद
लोग तुलसीमाता को जल चढ़ाते हैं
गाँव के पच्छूँ ओर
जहाँ कई घने नीम के पेड़ हैं
उन पेड़ों के नीचे चबूतरा बनाकर
गाँव का कल्लू कोहार
प्रत्येक वर्ष दीपावली के पर्व पर
नई-नई मूर्तियाँ बनाकर रखता है
सबसे बड़ी मूर्ति हाथी की होती है
जिसमें गणेश जी वास करते हैं
कई छोटी-छोटी मूर्तियाँ भी
हाथी की होती हैं
मिट्टी का शिवलिंग बनाकर
आवाँ में पकाता है
कालीमाई के चबूतरे पर
सजाता है
गौरा जी की भी
छोटी सी मूर्ति बनाता है
गाँव की सभी औरतें
पूजा करने वहीं जाती हैं
गाँव का सबसे बड़ा मंदिर वहीं है
ग्राम देवता का निवास वहीं है
आस्था के उमड़ते हुए सैलाब का नजारा
देखने को मिलता है वहाँ
अपनी मेहनत की कमाई की
पूजा चढ़ती है वहाँ
लूट-खसोट करने वाले
पूजा करने नहीं आते वहाँ
ज्यादा-ज्यादा चढ़ावा
नहीं चढ़ता है वहाँ
प्रत्येक फसल कटने पर
गाँव की औरतें
सबसे पहले ज्यौनार
चढ़ाती है वहाँ
नागपंचमी के पर्व पर नाग देवता को
दूधए लावाए और चना चढ़ता है वहाँ
दीपावली पर प्रत्येक घर से
दीपक जलता है वहाँ
गाँव की जब कोई बेटी विदा होती है
या फिर नई बहू का आगमन होता है
धार का जल चढ़ता है वहाँ
गाँव में सबसे अधिक
पूज्य हैं कालीमाई
गाँव की औरतें
कालीमाई की कढ़ाही
वर्ष में कई बार चढ़ाती हैं
गंगा मैया को कढ़ाही देने
नदी किनारे नहीं जा पाती हैं
तो काली माई को ही
कढ़ाही चढ़ा देती हैं
गाँव के निकट
कोई भी नदी बह रही हो
गाँव के लिए वह
गंगा मैया ही हैं
गाँव की सभी औरतें
एक-दूसरे को सूचना देती रहती हैं
कल काली माई की कढ़ाही
जरुर चढ़ानी है
या कल गंगा मैया को
कढ़ाही देने नदी किनारे चलना है
सुबह होते ही सभी औरतें
कालीमाई के स्थान पर
इकट्ठा हो लेती हैं
वहीं मिट्टी या ईंट का चूल्हा बनाकर
देशी घी में पूड़ी छानती हैं
आटे की लप्सी घोरती हैं
जिनके पास छानने वाला
पौना नहीं होता है
वे लकड़ी से ही छेद करके
पूड़ी निकालती हैं
फिर काली माई को चढ़ता है
पूड़ी और लप्सी का प्रसाद
गंगा मैया को भी नदी किनारे
कढ़ाही इसी तरह चढ़ती है
बाद में सभी औरतें
एक-दूसरे कोए बच्चों को
पूड़ी और लप्सी प्रसाद में देती हैं
सभी औरतें अपने से बड़ी औरतों का
पैर छूकर ढेर सारा आशीर्वाद लेती हैं
बड़ी-बूढ़ी औरतें खुश होकर
खूब जोर-जोर से आशीर्वाद देती हैं -
दूधों नहाओए पूतो फलों
सदा सुहागिन रहो
माँगए कोख अमर रहे।

चुनाव

चुनाव चुनाव चुनाव चुनाव
चारो तरफ हो हल्ला है
चुनाव में मशगूल
हर गली मोहल्ला है
चौराहे-चौराहे चर्चा है
हर तरफ बिखरा नेता का पर्चा है
नेताओं का नारा है
भ्रष्टाचार मिटाना है
महँगाई महँगाई बहुत हो चुकी
अब महंगाई मिटाना है
ससताई लाना है
रोजगार और रोजी रोटी सबको
उपलब्ध कराना है
शिक्षा और स्वास्थ्य का
अधिकार सबको दिलाना है
पर हो क्या रहा है
जनता सीन देख रही है
भ्रष्टाचार तो नहीं मिट रहा
पर शिष्टाचार जरूर गिर रहा है
महँगाई भी नहीं कम हो रही
ससताई की उम्मीद कैसे करें
रोजगार और रोटी का
सब तरफ हो रहा बुरा हाल है
हर हाल में जनता बेहाल है
शिक्षा और स्वास्थ्य पर
पैसेवालों का अधिकार है
कहने को जनता की सरकार है
पर जनता को मिलता बस धिक्कार है
जनता को वोट नेता को उपहार है
पर हर तरफ जनता की हार ही हार है।
चुनावी पर्व

डाण् रतन कुमारी वर्मा
जब चुनावी पर्व आता है
अपने साथ ढेर सारी
खूबियाँ लेकर आता है।
चुनाव आते ही
सरगर्मियाँ तेज हो जाती हैं
चारों तरफ चहल-पहल
और हलचल तेज हो जाती है।
गाँव-गाँवए शहर-शहर
गली-गलीए मोहल्ले-मोहल्ले
नुक्कड़ सभाए रोड शो
रैलियाँ रेलमरेल हो जाती हैं।
नेताओं के जबान की छूरियाँ
खूब तेज हो जाती हैं।
शुरू हो जाती है बदजुबानी
आरोप-प्रत्यारोपए गाली-गलौज
आम हो जाता है
सबकी इज्जत सरे आम
नीलाम होने लगती है
हर नेता अपने को इज्जतदार
होने का दावा करने लगता है
दूसरे नेता की इज्जत पर
सदा हमला बोलता है।
नेता आम जनता से
वादा करता है
इरादा बताता है
आश्वासन देता है
विश्वास जीतना चाहता है
प्रलोभनों के जाल में
फँसाता है
पर वोट लेने के बाद
पाँच साल तक वह
अपने क्षेत्र में
दिखाई भी नहीं देता है।
जनता ढगा हुआ
महसूस करती है
पाँच साल बाद
नेता जब फिर वोट माँगने आता है
तब जनता उससे अपना हिसाब पूछती है
अब जनता भी जागरूक हो चुकी है
अपने मत का उचित उपयोग चाहती है
अब जनता मौन नहीं रहती
नेता से प्रश्न पूछती है
पाँच साल तक दिखाई नहीं दिये
आपके वादे-इरादे कहाँ गये
आम जनता नेता बदल देती है
दूसरी पार्टी का दूसरा नेता चुनती है
वह भी वही इतिहास दुहराता है
जनता गुमराह होती है
फिर वहीं खोखली बातेंए
झूठे वादे-कसमेंए ईरादे
जनता फिर ठगी जाती है
बार-बार ठगी जाती है
हर पार्टी का नेता
यही इतिहास दुहराता है
चुनने के विकल्प भी बहुत सीमित है
जनता किसको चुनेए किसको छोड़ेघ्
जनता अब ऊब चुकी है
वह ठोस कार्य और विकास चाहती है
वह धर्म जाति की खाई के परे
अपना आधार चाहती है
वह जीवन और जीने का
अधिकार चाहती है।

जिन्दगी

आदि-अंत का शुभ नाम है जिन्दगी।
उतार-चढ़ाव का उपनाम है जिन्दगी।।
सृष्टि का अनुपम उपहार है जिन्दगी।
नव निर्माण का आधार है जिन्दगी।।
नाश-निर्माण का क्रम है जिन्दगी।
हार-जीत का भ्रम है जिन्दगी।।
फूल-शूल का स्वरूप है जिन्दगी।
खुशी-गम का प्रतिरूप है जिन्दगी।।
आस-विश्वास की नाव है जिन्दगी।
घात-प्रतिघात का छलाव है जिन्दगी।।
प्रेम-प्रपंच का पुंज है जिन्दगी।
धूप-छाव की कुंज है जिन्दगी।।
उन्नति-अवनति की सीढ़ी है जिन्दगी।
सद्गति-दुर्गति की गति है जिन्दगी।।
स्वार्थ सर्वार्थ का सघन वन है जिन्दगी।
आँधी-तूफान का झंझावात है जिन्दगी।।
कल्पना की ऊँची हवेली है जिन्दगी।
पल-पल बदलती पहेली हैं जिन्दगी।।
विध्वंस की विभीषक प्रवृत्ति है जिन्दगी।
समन्वय की सुगम संस्कृति है जिन्दगी।।
सुख-दुख का मिश्रित रूप है जिन्दगी।
हँसती-रोती सदा रहती है जिन्दगी।।
प्रायश्चित की आग में झुलसती है जिन्दगी।
खुशी की शारदीय धूप में
नहाती है जिन्दगी।।
मानव-कल्याण का उद्गम है जिन्दगी।
जीवन-संगीत का सरगम है जिन्दगी।।
सुख का उड़ता हुआ बादल है जिन्दगी।
गम का गहरा सागर है जिन्दगी।।
धधकता हुआ आग का दरिया है जिन्दगी।
ठहरा हुआ हिम का सागर है जिन्दगी।।
परस्पर निर्भरता चाहती है जिन्दगी।
घर जुदा राहें तलाशती है जिन्दगी।।
नीर-क्षीर की विवेक दृष्टि है जिन्दगी।
जीण-शीर्ण की केंचुली हैं जिन्दगी।।
नित-नवीन का नवाभरण हैं जिन्दगी।
माया मोह से पलायन है जिन्दगी।।
पर-दुख कातरता का भान है जिन्दगी।
परमार्थ मर मिटना शान ही है जिन्दगी।।
शरण-रक्षार्थ दधीचि-सा बनना है जिन्दगी।
घायल का घाव स्नेह से भरना है जिन्दगी।।
कदम-कदम पर बुराई से लड़ना है जिन्दगी।
हर दम सबकी भलाई करना है जिन्दगी।।
बुराई के प्रतीकों से टक्कर लेना है जिन्दगी।
बाहुबलियों को लोहा मनवाना है जिन्दगी।।
दबे-कुचले को सहारा देना है जिन्दगी।
उपेक्षित-तिरस्कृत को अपनाना है जिन्दगी।।
संविधान को सच कर दिखाना है जिन्दगी।
अस्पृश्यता को जड़ से मिटाना है जिन्दगी।।
गाँधी के स्वप्नों को
साकार करना है जिन्दगी।
हर दिल में खुशी के
फूल खिलाना है जिन्दगी।।
कबीर की अलख जगाना है जिन्दगी।
जिन्दगी से जिन्दगी को जोड़ना है जिन्दगी।।
समभाव का सरोकार चाहती है जिन्दगी।
ऊँच-नीच का व्यापार करती है जिन्दगी।।
अमीर-गरीब की खाई खोदती है जिन्दगी।
परस्पर प्रेम-भाव की भाव भूमि है जिन्दगी।।
जायसी के प्रेम की पीर है जिन्दगी।
सर्वधर्म समभाव की नीड़ है जिन्दगी।।
तुलसी के भावनाओं की खीर है जिन्दगी।
मर्यादा का क्षण-क्षण अनुरक्षण है जिन्दगी।।
सूर के स्नेह का सागर है जिन्दगी।
जन-जन का अनुरंजन है जिन्दगी।।
मीरा के प्रेम में पगी है जिन्दगी।
कृष्ण-अनुराग में लोक-लाक तजी जिन्दगी।।
महादेवी की मधुमय वेदना विंधी जिन्दगी।
अनन्त ईश से मिलने को तृषित जिन्दगी।।
पंत का मनोरम प्रकृति प्रेम है जिन्दगी।
प्राकृतिक छटा पर न्यौछावर जिन्दगी।।
सेठ-सेठानियों के वर्णन में बीती जिन्दगी।
आम-आदमियों के पीड़ा की रीति जिन्दगी।।
निराला की व्यथा का विवरण जिन्दगी।
पत्थर तोड़ती नारी का विवरण जिन्दगी।।
बिल्लेसुर बकरिहा का सुर जिन्दगी।
चतुरी चमार का चित्र है जिन्दगी।।
प्रसाद की प्रसाद है जिन्दगी।
सुख-दुख में समभाव है जिन्दगी।।
प्रेमचन्द का जन प्रेम है जिन्दगी।
किसान की गाथा गाती जिन्दगी।।
गिरने वाले को खड़ा करना है जिन्दगी।
पिछली कतार वाले को
आगे लाना है जिन्दगी।।
बड़े का बड़प्पन करने में है जिन्दगी।
जन-कीटों को मनुज-
किरीट बनाना है जिन्दगी।।
द्विवेदी की भाषा सँवारती जिन्दगी।
भारतेन्दु की राष्ट्र चेतना जगाती जिन्दगी।।
दिनकर का राष्ट्र प्रेम है जिन्दगी।।
चौहान का वीर क्षत्राणी का
वर्णन है जिन्दगी।
गुप्त की यशोधरा का स्वाभिमान जिन्दगी।
उर्मिला के पावन मन का उपमान जिन्दगी।।
हरिऔध की राधा का विश्व प्रेम है जिन्दगी।
वसुधैव-कुटुम्बकम् का आधार विश्व-सेवा
है जिन्दगी।।
भावनाओं के सागर में डुबकी लेती जिन्दगी।
भावों के हीरे-मोती हेतु
गोते लगाती जिन्दगी।।
हार-उपहार का समभाव जिन्दगी।
लोभ-क्षोभ का अभाव जिन्दगी।।
दुख-परिताप का प्रभाव जिन्दगी।
स्नेह-सौहार्द का सद्भाव जिन्दगी।।
आम्र की रक्तिम कोपल-सी जिन्दगी।
डालियों की चूँ-चूँ मर्माराहट जिन्दगी।।
शिशुओं का आनन्द-नन्दन जिन्दगी।
पक्षियों का कलरव कूजन जिन्दगी।।
वीणा का झंकृत तार जिन्दगी।
पानी के बुलबुले की वारि जिन्दगी।।
नदी के लहरों सी लहर जिन्दगी।
काल के हाथों पिसती कहर जिन्दगी।।
बर्फ के भीतर छिपी आग जिन्दगी।
बादल के बीच विद्युताभ जिन्दगी।।
सागर की उफनती फेन जिन्दगी।
छुक-छुक चलती ट्रेन जिन्दगी।।
लुका-छिपी का निराला खेल है जिन्दगी।
कभी कपोल पर हँसी
कभी नयन में नीर है जिन्दगी।
चौक-चूल्हे में पिसती जिन्दगी।
हल चलाने से चलती जिन्दगी।।
हरियाली देख हर्षित होती जिन्दगी।
सरसों के फूल सी सरसित जिन्दगी।।
मधुमक्खियों का छत्ता जिन्दगी।
प्रबल जिजीविषा का पत्ता जिन्दगी।।
झुग्गी झोपड़ियों से रिसती जिन्दगी।
कल-कारखानों में घिसती जिन्दगी।।
मधुशाला की मधु में डूबी जिन्दगी।
भूख-प्यास की तड़प में उनींदी जिन्दगी।।
सड़कों-नालों में गिरती-पड़ती जिन्दगी।
नशे में हो जाती है मदहोश जिन्दगी।।
सरकारी राशन की
दुकानों पर खड़ी जिन्दगी।
खाद्यानों में मिलावट से
खराब हो रही जिन्दगी।।
भरी भीड़ में भी होती है अकेली जिन्दगी।
अकेले में भी होती है सबके साथ जिन्दगी।।
बालपन खेल में बीतती है जिन्दगी।
जवानी में बनती कहानी जिन्दगी।।
बुढ़ापे में हो जाती है वीरानी जिन्दगी।
कभी होता है न कोई सहयानी जिन्दगी।।
वय पार करते-करते उजड़ती जाती जिन्दगी।
सब कुछ होते हुए भी
सूनी होती जाती जिन्दगी।।
बनती जाती दुखद स्मृतियों का
पुलिन्दा जिन्दगी।
कभी न बन पाती खुशियों का
गुलिस्ताँ जिन्दगी।।
होती है सदा खुर-दुरी
ऊबड़-खाबड़ जिन्दगी।
कभी न हो पाती है
समरस समतल जिन्दगी।।
सुख की मृगतृष्णा में
तृषित जिन्दगी।
कभी पूरी न हो पाती है
अभीप्सित जिन्दगी।।
दर-दर की ठोकर खाती भटकती जिन्दगी।
अगणित दर्द से भरी कहानी है जिन्दगी।।
अनुभव से सयानी होती है जिन्दगी।
युगदृष्टा ने सदा बयानी है जिन्दगी।।
पाप-पुण्य का परिमाप है जिन्दगी।
जय-पराजय बनती अपने आप है जिन्दगी।।
सत्कर्म से होती सदा सु-यश भरी जिन्दगी।
दुष्कर्म से बनती है
सदा अपयश भरी जिन्दगी।।
धूप-छाह की आँख मिचौनी जिन्दगी।
कम-किस्मत की अनोखी पहेली जिन्दगी।।
बरसाती नदी सी उफनती जिन्दगी।
तोड़ तटबन्धों को तबाह करती जिन्दगी।।
माता-पिता की मर्यादा
दाँव पर लगाती जिन्दगी।
क्षण भर में सब कुछ धूल में
मिलाती जिन्दगी।।
क्रोध आवेश के वशीभूत हो
मिट जाती जिन्दगी।
परिजनों को नया-नया
जख्म दे जाती जिन्दगी।।
एक जिन्दगी को बनाने में
खप जाती है कई जिन्दगी।
रूठने वालों का कोई ख्याल करे
तो बचती है जिन्दगी।।
वरना पल भर भी नहीं लगाती है
मिटाने में जिन्दगी।
बस इसलिए माता-पिता की
बेहाल हो रही जिन्दगी।।
भौतिक समृध्दि की होड़ में
जर्जर हो रही जिन्दगी।
आध्यात्मिक संस्कृति सदा
सँवारती जिन्दगी।।
गणित के सूत्र में न कभी बँधती जिन्दगी।
भावों के फूल में है सदा खिलती जिन्दगी।।
प्रेम से रूखी-भूखी है सबकी जिन्दगी।
परस्पर प्रेम से खुशहाल हो
जायेगी सबकी जिन्दगी।।

अपेक्षा

धरती पर जब आँख खुली
मेरे रोने की आवाज पर
माँ की ममता उमड़ पड़ी
अपनी प्रसव पीड़ा से बेपरवाह
माँ मेरी हित चिन्ता में लग गयीं
पेट की क्षुधा जब शान्त हुई
तब मैं आनन्द निमग्न हो जाने कब सो गई
जब मैं चन्दा मामा को पहचानने लगीं
तब चन्दा मामा को ही पाने की जिद करने
लगीं

डॉ रतन कुमारी वर्मा की कविताएं

माँए आँगन की थाली में
चन्दा मामा को पकड़ाने लगी
पकड़ने के जाल में उलझी-उलझी
जाने कब भूल गई
पर जिद पूरी होती रही
पर जब मेरे घर में
भैया ने जन्म लिया
मानों कृष्ण-कन्हैंया आये
सब उससे ही अनुरंजन करने लगे
बस तब से सबने
मेरी तरफ देखना छोड़ दिया
कन्हैया-नन्दन के आनन्द में
सबने मेरी तरफ मुखातिब होना छोड़ दिया
कभी कोई मुखातिब होता भी था तो बड़े बेमन से
बहुत ईर्ष्या होती थी
न जाने कितनी बार बड़बड़ायी
मन ही मन बुदबुदायी
जब नहीं सहा गया
तब चीख-चीख कर चिल्लायी
पर किसी ने नही सुनी मेरी पुकार
जब जीवन में और आगे बढ़ी
तब हर जगह और बढ़ा संघर्ष
जीवन में संघर्ष का दायरा बढ़ता गया
सोचा हार नहीं मानूँगी
जीवन में संघर्ष करूँगी
एक दिन निश्चित ही हमारी जीत होगी
कैसे नहीं सुनेगा कोई मेरी बात
पर धीरे-धीरे
दुनिया की दुनियादारी
समझ में आने लगी
कोई किसी से खुश क्यों होता हैघ्
और किसी की क्यों होती है उपेक्षा
कोई किसी को अनदेखा क्यों करता हैघ्
जब जिसका जिससे
मतलब नही सधता है
बस वही से उसकी
शुरू हो जाती है उपेक्षा
या दिमाग में यह बैठ जाता है
कि यह हमारे काम नहीं आयेगा
दुनिया में उपेक्षित होने का
राज तब समझ में आया
तब उपेक्षा से ही होने लगा लगाव
उपेक्षा तो हर क्षण की साथी है
अपेक्षा तो हर बार दूर निकल जाती है
क्योंकि अपेक्षा की अपेक्षा
पूरा होना है बहुत मुश्किल
अधिकांश माँ-बाप को अपनी अपेक्षा
पुत्र में ही नजर आती है
इसी आस में उनकी जिन्दगी कट जाती है
लेकिन जिन्दगी में जब जरुरत पड़ती है
तब असलियत सामने नजर आती है
यह समझना बहुत मुश्किल है
अपेक्षा किससे पूरी होती है
कहीं अपेक्षा पुत्र से पूरी होती है
तो कहीं अपेक्षा पुत्री से भी पूरी होती है
भगवान ने जिसको अच्छा इंसान बनाया होता है
उसी से माँ-बाप की अपेक्षा पूरी होती है
उसी से समाज की अपेक्षा पूरी होती है।
उसी से संसार की अपेक्षा पूरी होती है।

जय जवान - जय किसान

यह देश है वीर जवानों का,
यह देश है वीर किसानों का।
उनके ही कन्धों पर भार है पूरे हिन्दुस्तान का।
जो सरहद पर दिनरात हमारी रक्षा करते हैए
हम अपने घर में बैठे अमन-चैन से सोते हैं।
वन रैंक वन पेंशन पूरी तरह से
मिलेए सभी सैनिको की माँगे हैं,
तरह-तरह की पेंशन में भिन्नताए
यह उनके लिए सब घातें हैं।
पूरी पेंशन पाने के लिए
क्यों वीरता सम्मान
वापस करना पड़ता है ।
जब हम वीर जवानों को
मजबूर करते हैं उनकी नहीं सुनते हैं।
तब अपनी बात सुनाने के लिए,
सरकार तक बात पहुँचाने के लिएए
वीरता सम्मान वापस करने का
रास्ता चुनने को मजबूर होना पड़ता है।
हम हमेशा कहते हैं,
हम सैनिकों का बहुत सम्मान करते हैं,
सैनिकों को पूरा सम्मान तभी महसूस होगा,
जब पूरी पेंशन आजीवन बिना किसी टेंशन के मिलेगी।
वीर शहीदों को हम देशवासी
बार-बार कोटिशरू नमन करते है,
और नमन करते है उनके माता-पिता,
भाई-बन्धु परिवार कोए
जो उनके न रहने पर हर तरह का कष्ट सहते हैं।
हम आजाद होकर अमन चैन से सोते हैं।
जो भी वीर-जवान देश हित में शहीद हो जायें,
उसके परिवार को पूरी पेंशन मिलना जरूरी है।
सेवा शर्तों और नियमावलियों में बदलाव लाना जरूरी है,
पुराने नियम कानून को ही ढोने की क्या मजबूरी है।
सबके प्रति बदल रहे हैं
तो जवानों के प्रति क्यों नहीं बदलते है,
उनकी दिक्कतों पर हम गम्भीरता से
क्यों नहीं विचार करते है।
उनके परिवार की कठिनाइयों पर
क्यों नहीं ध्यान देते हैं,
इस देश के लिए मर मिटने वाला
हर एक सैनिक शहीद है।
जब हम वीर सैनिकों को
शहीद का दर्जा देते है,
सम्मान करते हैं,
तब हम सैनिकों के लिए
शहीद पेंशन योजना लाने से क्यों कतराते हैं।
तब हम क्यों यह नियम लागू करतें हैं
कि सेवाकाल की अवधि यह होनी चाहिएए
जो सैनिक सौभाग्यशाली हैं,
वो पूरी सेवा करते हैए
पूरी पेंशन पाते हैं आजीवन
और पूरा सम्मान पाते हैं।
पर जिस माता-पिता का वीर
लाल सेना में जाते हीए
सीमा की रक्षा करता हुआ
शहीद हो जाता है।
उसका पार्थिव शरीर तिरंगा झण्डा में
लपेटकर वापस आता है।
पत्नी के हाथों की मेंहदीए पैरों में
महावर की लाली,
अभी सूख भी नहीं पायी होती है,
माँग का सिन्दूर लुट जाता है।
उसके माता-पिताए पत्नी को
पूरी पेंशन क्यों नहीं मिल पाती है ।
तब सेवा काल का समय क्यों मापा जाता है ।
क्यों आधार बनाया जाता है समय सीमा का ।
सेवाकाल का समय नहींए उद्देश्य देखना चाहिए,
भारत माँ के हर वीर लाल को पेंशन मिलना चाहिए।
क्या बात है कि आज
किसान आन्दोलन पर उतर आये हैं।
उनसे वार्ता कर हम उनकी बात को
क्यों नहीं सुलझा पाये हैं ।
जब हम मानते है कि किसान ही हमारा अन्नदाता है।
वहीं हमें खिलाता है वही हमें जिलाता है।
वह ही हमारे राष्ट्र की रीढ़ की हड्डी है।
उसके बिना पूरा राष्ट्र धूल की पगडण्डी है।
जनता के लिए जनता के राज का सपना तभी पूरा होगा,
जब हर जवानए हर किसान के
मन का सपना पूरा होगा।
किसानों की उन्नति कैसे होगी ।
जब तक हम इस पर विचार नहीं करेंगे,
तब तक उनकी स्थिति में
आवश्यक सुधार कैसे होंगे ।
स्वामीनाथन से लेकर अब तक के
किसानों की आवाज सुननी होगी।
तभी किसानों की हालत बदलेगी,
उनकी बिगड़ी दशा सुधरेगी।
किसानों की उन्नति की बात तो अभी दूर की कौड़ी है।
लागत अधिक लगती पर कीमत मिलती बहुत थोड़ी है।
किसान कभी अतिवृष्टिए
कभी ओलावृष्टि का शिकार बन जाता है।
कभी सूखा पीड़ित
कभी विविध प्रकार के कीटों के
नुकसान को सहता है।
उसकी खेत में लगाई हुई लागत,
मेहनत भी नहीं मिल पाती है।
ऊपर से एमएसण्पीण् की माँग भी
नहीं पूरी हो पाती है।
हमारा अन्नदाता आत्महत्या करने को
क्यों मजबूर हो जाता है ।
जो मेहनत करके दूसरों को खिलाता हैं,
वह क्यों खुद खत्म हो जाता है ।
उसकी इस समस्या की जड़ को
समझना जरूरी है
आत्महत्या करने की मजबूरी को
दूर करना बहुत ही जरूरी है।
ऐसी व्यवस्था करनी होगी,
हर किसान खुशहाल हो जाये।
किसान खुश तभी हो पायेगा,
जब उसकी स्थिति बदलेगी।
जब उसके उत्पादन के बदले
अच्छी कीमत की गारण्टी होगी।
जब हम जुबान से किसानों का बहुत सम्मान करते है।
तब हम उनकी माँगों को उनके
अनुसार क्यों नहीं मान लेते हैं।
किसान भी खुशहाल हो जायें,
जवान भी खुशहाल हो जायें।
भारत माँ के हर लाल के
चेहरे पर मुस्कान लहराये।
यह देश है वीर जवानों का,
यह देश है वीर किसानों का।
उनके ही कन्धों पर है भार सारे हिन्दुस्तान का।
उनको बार-बार नमन करता है सारा हिन्दुस्तान।
जय जवान - जय किसानए जय जवान दृ जय किसान।

जिन्दगी

आदि-अंत का शुभ नाम है जिन्दगी।
उतार-चढ़ाव का उपनाम है जिन्दगी।।
सृष्टि का अनुपम उपहार है जिन्दगी।
नव निर्माण का आधार है जिन्दगी।।
नाश-निर्माण का क्रम है जिन्दगी।
हार-जीत का भ्रम है जिन्दगी।।
फूल-शूल का स्वरूप है जिन्दगी।
खुशी-गम का प्रतिरूप है जिन्दगी।।
आस-विश्वास की नाव है जिन्दगी।
घात-प्रतिघात का छलाव है जिन्दगी।।
प्रेम-प्रपंच का पुंज है जिन्दगी।
धूप-छाव की कुंज है जिन्दगी।।
उन्नति-अवनति की सीढ़ी है जिन्दगी।
सद्गति-दुर्गति की गति है जिन्दगी।।
स्वार्थ सर्वार्थ का सघन वन है जिन्दगी।
आँधी-तूफान का झंझावात है जिन्दगी।।
कल्पना की ऊँची हवेली है जिन्दगी।
पल-पल बदलती पहेली हैं जिन्दगी।।
विध्वंस की विभीषक प्रवृत्ति है जिन्दगी।
समन्वय की सुगम संस्कृति है जिन्दगी।।
सुख-दुख का मिश्रित रूप है जिन्दगी।
हँसती-रोती सदा रहती है जिन्दगी।।
प्रायश्चित की आग में झुलसती है जिन्दगी।
खुशी की शारदीय धूप मे नहाती है जिन्दगी।।
मानव-कल्याण का उद्गम है जिन्दगी।
जीवन-संगीत का सरगम है जिन्दगी।।
सुख का उड़ता हुआ बादल है जिन्दगी।
गम का गहरा सागर है जिन्दगी।।
धधकता हुआ आग का दरिया है जिन्दगी।
ठहरा हुआ हिम का सागर है जिन्दगी।।
परस्पर निर्भरता चाहती है जिन्दगी।
घर जुदा राहें तलाशती है जिन्दगी।।
नीर-क्षीर की विवेक दृष्टि है जिन्दगी।
जीण-शीर्ण की केंचुली हैं जिन्दगी।।
नित-नवीन का नवाभरण हैं जिन्दगी।
माया मोह से पलायन है जिन्दगी।।
पर-दुख कातरता का भान है जिन्दगी।
परमार्थ मर मिटना शान ही है जिन्दगी।।
शरण-रक्षार्थ दधीचि-सा बनना है जिन्दगी।
घायल का घाव स्नेह से भरना है जिन्दगी।।
कदम-कदम पर बुराई से लड़ना है जिन्दगी।
हर दम सबकी भलाई करना है जिन्दगी।।
बुराई के प्रतीकों से टक्कर लेना है जिन्दगी।
बाहुबलियों को लोहा मनवाना है जिन्दगी।।
दबे-कुचले को सहारा देना है जिन्दगी।
उपेक्षित-तिरस्कृत को अपनाना है जिन्दगी।।
संविधान को सच कर दिखाना है जिन्दगी।
अस्पृश्यता को जड़ से मिटाना है जिन्दगी।।
गाँधी के स्वप्नों को साकार करना है जिन्दगी।
हर दिल में खुशी के फूल खिलाना है जिन्दगी।।
कबीर की अलख जगाना है जिन्दगी।
जिन्दगी से जिन्दगी को जोड़ना है जिन्दगी।।
समभाव का सरोकार चाहती है जिन्दगी।
ऊँच-नीच का व्यापार करती है जिन्दगी।।
अमीर-गरीब की खाई खोदती है जिन्दगी।
परस्पर प्रेम-भाव की भाव भूमि है जिन्दगी।।
जायसी के प्रेम की पीर है जिन्दगी।
सर्वधर्म समभाव की नीड़ है जिन्दगी।।
तुलसी के भावनाओं की खीर है जिन्दगी।
मर्यादा का क्षण-क्षण अनुरक्षण है जिन्दगी।।
सूर के स्नेह का सागर है जिन्दगी।
जन-जन का अनुरंजन है जिन्दगी।।
मीरा के प्रेम में पगी है जिन्दगी।
कृष्ण-अनुराग में लोक-लाक तजी जिन्दगी।।
महादेवी की मधुमय वेदना विंधी जिन्दगी।
अनन्त ईश से मिलने को तृषित जिन्दगी।।
पंत का मनोरम प्रकृति प्रेम है जिन्दगी।
प्राकृतिक छटा पर न्यौछावर जिन्दगी।।
सेठ-सेठानियों के वर्णन में बीती जिन्दगी।
आम-आदमियों के पीड़ा की रीति जिन्दगी।।
निराला की व्यथा का विवरण जिन्दगी।
पत्थर तोड़ती नारी का विवरण जिन्दगी।।
बिल्लेसुर बकरिहा का सुर जिन्दगी।
चतुरी चमार का चित्र है जिन्दगी।।
प्रसाद की प्रसाद है जिन्दगी।

शहर समता - ब्यूरो प्रमुख

देहरादून ब्यूरो - निशा अतुल्य,
सतना ब्यूरो - डॉ ऊषा सक्सेना,
रीवां ब्यूरो - साधना तिवारी,
लखनऊ ब्यूरो - मंजु सक्सेना,
जबलपुर ब्यूरो - शैली सेठ,
लुधियाना ब्यूरो - श्रद्धा शुक्ला,
जौनपुर ब्यूरो - डॉ मधु पाठक,
हैदराबाद ब्यूरो -रीना प्रदीप कुमार,
भिलाई ब्यूरो - संध्या चंदेल,
गोरखपुर ब्यूरो - चित्रा श्रीवास्तव,
दिल्ली ब्यूरो - अफरोज़ अजीज,
तिनसुकिया गोलाघाट ब्यूरो - रंजना बिनानी,
प्रयागराज ब्यूरो - डॉ आकांक्षा पाल,
भीलवाड़ा ब्यूरो - डॉ राजमति पोखरना,
इंदौर ब्यूरो - आशा जाकड़,
शिलांग ब्यूरो - डॉ अनीता पंडा,
बिलासपुर ब्यूरो - स्मृति मिश्रा 'रीति,
रायपुर ब्यूरो - सीमा निगम,
कानपुर ब्यूरो - सीमा वर्णिका,
भोपाल ब्यूरो - दीपमाला तिवारी,
दमोह ब्यूरो- भावना शिवहरे,
मण्डला ब्यूरो - डॉ अर्चना जैन
बनारस ब्यूरो - सुनीता जौहरी,
आरा ब्यूरो - सिम्पल सिंह,
बिजनौर ब्यूरो - ऋतुबाला रस्तोगी,
पठानकोट ब्यूरो - क्षमा लाल गुप्ता,
सप्तरी नेपाल ब्यूरो - करुणा झा,
धमतरी ब्यूरो - कामिनी कौशिक,
रामपुर ब्यूरो - चंद्रिका कुमार 'चांदनी',,
मुरादाबाद ब्यूरो - अभिव्यक्ति सिन्हा,
कटनी ब्यूरो - मीरा भार्गव,
पटना ब्यूरो - अंजू भारती

शहर समता (हिन्दी साप्ताहिक) के वार्षिक एवं तीन वर्षीय सदस्य बनें।

वार्षिक सदस्यता के लिए -200/- तीन वर्षीय सदस्यता के लिए -500/-

कृपया 'शहर समता' के नाम से चेक या आनलाइन भेज सकते है।
IFSC Code- PUNB0100120 A/c.-1001050011592

व्यवस्थापक
शहर समता (हिन्दी साप्ताहिक)
289/238 ए (अनंत भवन) कर्नलगंज ,इलाहाबाद-211002

पीडीफ़ के लिए
shaharsamta.blogspot.com
पर जाएँ ।

संस्थापक
स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 साधना श्रीवास्तव

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
आरएनआई नं0 UPHIN/2001/3996

उप संपादक
डा0 अरूण कुमार मिश्रा
रचना सक्सेना

Mo. 9005239332 Email-shaharsamta@gmail.com

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन प्रेस (पलि.) प्रा0लि0, 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, (अनन्त भवन) कर्नलगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।

इस अंक के प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा समस्त विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में ही होगा।

डॉ रतन कुमारी वर्मा की कविताएं

सुख-दुख में समभाव है जिन्दगी।।
प्रेमचन्द का जन प्रेम है जिन्दगी।
किसान की गाथा गाती जिन्दगी।।
गिरने वाले को खड़ा करना है जिन्दगी।
पिछली कतार वाले को
आगे लाना है जिन्दगी।।
बड़े का बड़प्पन करने में है जिन्दगी।
जन-कीटों को
मनुज-किरीट बनाना है जिन्दगी।।
द्विवेदी की भाषा सँवारती जिन्दगी।
भारतेन्दु की राष्ट्र चेतना जगाती जिन्दगी।।
दिनकर का राष्ट्र प्रेम है जिन्दगी।।
चौहान का वीर क्षत्राणी का
वर्णन है जिन्दगी।
गुप्त की यशोधरा का स्वाभिमान जिन्दगी।
उर्मिला के पावन मन का उपमान जिन्दगी।।
हरिऔध की राधा का विश्व प्रेम है जिन्दगी।
वसुधैव-कुटुम्बकम् का
आधार विश्व-सेवा है जिन्दगी।।
भावनाओं के सागर में
डुबकी लेती जिन्दगी।
भावों के हीरे-मोती हेतु
गोते लगाती जिन्दगी।।
हार-उपहार का समभाव जिन्दगी।
लोभ-क्षोभ का अभाव जिन्दगी।।
दुख-परिताप का प्रभाव जिन्दगी।
स्नेह-सौहार्द का सद्भाव जिन्दगी।।
आम्र की रक्तिम कोपल-सी जिन्दगी।
डालियों की चूँ-चूँ मर्माराहट जिन्दगी।।
शिशुओं का आनन्द-नन्दन जिन्दगी।
पक्षियों का कलरव कूजन जिन्दगी।।
वीणा का झंकृत तार जिन्दगी।
पानी के बुलबुले की वारि जिन्दगी।।
नदी के लहरों सी लहर जिन्दगी।
काल के हाथों पिसती कहर जिन्दगी।।
बर्फ के भीतर छिपी आग जिन्दगी।
बादल के बीच विद्युताभ जिन्दगी।।
सागर की उफनती फेन जिन्दगी।
छुक-छुक चलती ट्रेन जिन्दगी।।
लुका-छिपी का निराला खेल है जिन्दगी।
कभी कपोल पर हँसी
कभी नयन में नीर है जिन्दगी।
चौक-चूल्हे में पिसती जिन्दगी।
हल चलाने से चलती जिन्दगी।।
हरियाली देख हर्षित होती जिन्दगी।
सरसों के फूल सी सरसित जिन्दगी।।
मधुमक्खियों का छत्ता जिन्दगी।
प्रबल जिजीविषा का पत्ता जिन्दगी।।
झुग्गी झोपड़ियों से रिसती जिन्दगी।
कल-कारखानों में घिसती जिन्दगी।।
मधुशाला की मधु में डूबी जिन्दगी।
भूख-प्यास की तड़प में उनींदी जिन्दगी।।
सड़कों-नालों में गिरती-पड़ती जिन्दगी।
नशे में हो जाती है मदहोश जिन्दगी।।
सरकारी राशन की
दुकानों पर खड़ी जिन्दगी।
खाद्यानों में मिलावट से
खराब हो रही जिन्दगी।।
भरी भीड़ में भी होती है अकेली जिन्दगी।
अकेले में भी होती है सबके साथ जिन्दगी।।
बालपन खेल में बीतती है जिन्दगी।
जवानी में बनती कहानी जिन्दगी।।
बुढ़ापे में हो जाती है वीरानी जिन्दगी।
कभी होता है न कोई सहयानी जिन्दगी।।
वय पार करते-करते उजड़ती जाती जिन्दगी।
सब कुछ होते हुए भी
सूनी होती जाती जिन्दगी।।
बनती जाती दुखद स्मृतियों का
पुलिन्दा जिन्दगी।
कभी न बन पाती खुशियों का
गुलिस्ताँ जिन्दगी।।
होती है सदा खुर-दुरी
ऊबड़-खाबड़ जिन्दगी।
कभी न हो पाती है समरस समतल
जिन्दगी।।
सुख की मृगतृष्णा में तृषित जिन्दगी।
कभी पूरी न हो पाती है
अभीप्सित जिन्दगी।।
दर-दर की ठोकर खाती भटकती जिन्दगी।
अगणित दर्द से भरी कहानी है जिन्दगी।।
अनुभव से सयानी होती है जिन्दगी।
युगदृष्टा ने सदा बयानी है जिन्दगी।।
पाप-पुण्य का परिमाप है जिन्दगी।
जय-पराजय बनती अपने आप है जिन्दगी।।
सत्कर्म से होती सदा सु-यश भरी जिन्दगी।
दुष्कर्म से बनती है
सदा अपयश भरी जिन्दगी।।
धूप-छाह की आँख मिचौनी जिन्दगी।
कम-किस्मत की अनोखी पहेली जिन्दगी।।
बरसाती नदी सी उफनती जिन्दगी।
तोड़ तटबन्धों को तबाह करती जिन्दगी।।
माता-पिता की मर्यादा
दाँव पर लगाती जिन्दगी।
क्षण भर में सब कुछ
धूल में मिलाती जिन्दगी।।
क्रोध आवेश के वशीभूत हो
मिट जाती जिन्दगी।
परिजनों को नया-नया
जख्म दे जाती जिन्दगी।।
एक जिन्दगी को बनाने में
खप जाती है कई जिन्दगी।
रूठने वालों का कोई ख्याल करे
तो बचती है जिन्दगी।।
वरना पल भर भी नहीं लगाती है
मिटाने में जिन्दगी।
बस इसलिए माता-पिता की
बेहाल हो रही जिन्दगी।।
भौतिक समृध्दि की होड़ में
जर्जर हो रही जिन्दगी।
आध्यात्मिक संस्कृति सदा
सँवारती जिन्दगी।।
गणित के सूत्र में न कभी बँधती जिन्दगी।
भावों के फूल में है सदा खिलती जिन्दगी।।
प्रेम से रूखी-भूखी है सबकी जिन्दगी।
परस्पर प्रेम से खुशहाल हो
जायेगी सबकी जिन्दगी।।

न्याय

इंसान गुहार लगा रहा है
न्याय चाहिएए न्याय चाहिए।
पर हर तरफ मिल रहा है उसे
अन्याय ही अन्याय।
भ्रष्टाचार का दीमक
खा रहा है जड़ मूल्य की
मूल्य भी हो रहा है अब नवीनीकृत
पहले घूस लेना
माना जाता था
बहुत बड़ा अपराध
अब घूस लेना
माना जाता है
सुविधा शुल्क
पनप रही है संस्कृति अब
सुविधा शुल्क की
बदल रही है दृष्टि अब
सुविधा शुल्क देने एवं लेने वालों की
बाकी समाज चिल्ला रहा है
लूट मची है लूट
अन्याय हो रहा है अन्याय
सब तरफ मचा हुआ है अन्याय
न्याय कौन दे कौन ले
न्याय किसको मिले
जब जिसको मौका मिलता है
वह सुविधा शुल्क का
देता या लेता बन जाता है
जब काम नहीं बन पाता है
तब हाहाकार मचाता है
मारी जाती है केवल बेवस जनता
वह न्याय की पंक्ति में कभी भी
अपने को खड़ा हुआ नहीं पाती है
पिसती है केवल जनता
बेबस जनता
बेसहारा जनता
जब सबको मिल सके न्याय
तब पूरी हो सके परिभाषा न्याय की।

पहचान

मैं भी अपनी पहचान बनाऊंगी।
पीण्टीण् ऊषा बनकर
उड़नपरी कहलाऊँगी।
कल्पना चावला बनकर
अन्तिरक्ष में परचम लहराऊँगी।
सानिया मिर्जा बनकर
टेनिस में धाक जमाऊँगी।
सायना नेहवाल बनकर
बैडमिन्टन में पैठ बनाऊँगी।
इंदिरा गाँधी बनकर
भारत का नव निर्माण करूँगी।
मायावती बनकर
नया इतिहास रचूँगी।
सोनिया गाँधी बनकर
ताकत का नया अध्याय लिखूँगी।
प्रतिभा पाटिल बनकर
शीर्ष पद से सुशोभित करूँगी।
किरण बेदी बनकर
पुलिस की शान बढ़ाऊँगी।
इंदिरा नूई बनकर
अर्थतंत्र की रीढ़ बन जाऊँगी।
जन-जन के मन को हर्षित करने को
तन-मन-धन अर्पित कर दूँगी।
नारी शक्ति को जागृत करने का
शंखनाद करूँगी।
मदर टेरेसा बनकर
ममता का सागर उड़ेल दूँगी।
मैं भी अपनी पहचान बनाऊँगी।

पोखर-तालाब

पोखर प्रतीक हुआ करता था
पवित्रता काए शुचिता का
गाँव के जिस ओर पोखर हुआ करता था
उधर गाँव का कोई भी व्यक्ति
शौच क्रिया के लिए नहीं जाता था
शौच क्रिया का क्षेत्र तालाब हुआ करता था
तालाब में पशुओं को स्नान कराया जाता था
गायए भैंस सभी जानवर
तालाब में ही घंटों नहाया करते थे
धोबी तालाब में ही कपड़े धोता था
कुम्हार प्रत्येक वर्ष मिट्टी
तालाब तथा पोखर दोनों ही
जगहों से लाया करता था
तालाब तथा पोखर
दोनों की गहराई
निरन्तर बनी रहती थी
पोखर में सभी केवल नहाते थे
तैरने की कला का प्रशिक्षण
सभी एक-दूसरे से यहीं पाते थे
बच्चे किनारे नहाते थे
औरतें थोड़ी गहराई में
खड़ी होकर नहाती थीं
लड़कियाँ तथा लड़के
अपनी-अपनी टोली में
एक-दूसरे की देख-रेख में
तैरना सीखते थे
तैराकी का सबसे बड़ा अड्डा
पोखर ही हुआ करता था
आज तालाब या पोखर
सरकारी कागजों में ज्यादा खुद रहे हैं
और खुद ब खुद पट भी जा रहे हैं
गाँव के लोग जल संकट से
त्राहि-त्राहि कर रहे हैं
भीषण गर्मी में मवेशी मर रहे हैं
सिचाई के साधन समाप्त हो रहे हैं
थोड़ी सी बरसात होने पर
तुरन्त बाढ़ की स्थिति आ जाती है
पानी इकट्ठा होने की जगह
सब पट चुकी है
कुम्हार अब तालाब
या पोखर या गड्ढ़ही की
मिट्टी नहीं निकालता
क्योंकि उसके बर्तनों की बिक्री
अब कम हो गई है
कुल्हणए कोसिया की
अब जरूरत रही नहीं
उसका स्थान प्लास्टिक के गिलास,
प्लेट ने ले लिया है
कोई भी पर्व हो या त्यौहार
किसी की शादी हो या हो शुभ कार्य
दो-चार कुल्हणए कोसाए कोहा
परईए पतकीए मेटीए हाँड़ी से
अब काम चल जाता है
कमोरीए कमोंरा का स्थान
प्लास्टिक, स्टील के बर्तनों ने ले लिया है
गाँधी के सपनों की रीढ़ टूट रही है
कुम्हार बेकार हो रहा है
आँवा लगाने की उसको अब जरुरत नहीं
उसकी जिन्दगी ही आवाँ बन गई है।
पोखर-तालाब अब उथले हो रहे हैं
जो सरकारी पैसा कागज में
पोखर-तालाब खुदवाने में खर्च हो रहा है
हकीकत में उस पैसे से
ग्राम विकास अधिकारियों का
ग्राम विकास के बड़े ठेकेदारों का
शहर में मकान बन रहा है
गाँव बेहाल हो रहा है
सरकार बहुत सचेत है
पर सरकार सो रही है
बयान में ही देश की प्रगति हो रही है
तालाब में मत्स्य पालन का
मकड़जाल दिखाया जा रहा है
व्यवसाय का विकास
बताया जा रहा है
पर सब मिलकर लूट रहे है
जनता लुट रही है
बदहाली में जीने को
मजबूर हो रही है।

प्रेम

प्रेम की सरिता बहाते चलोए
गले से गले मिलाते चलो।
प्रेम-सुधा रस बरसाते चलोए
जाति-पातिए वग-भेंद मिटाते चलो।
प्रेम की ऊर्जा जगाते चलो।
साम्प्रदायिकता को मिटाते चलोए
सूफी प्रेम का दीपक जलाते चलो।
अमीर-गरीब का भेद-भाव मिटाते चलोए
सद्भाव की गंगा बहाते चलो।
दीन-जनों पर दया करते चलोए
प्रेम-वाणी से पुचकारते चलो।
क्षमा-दया का भाव भरते चलोए
सहिष्णुता का पाठ पढ़ाते चलो।
अशक्त हैं जो जन उनकी शक्ति बनोए
उनको सहारा देकर आगे बढ़ाते चलो।
भाव के भूखे हैं जो जन उन्हेंए
सम्मान की सरिता में नहलाते चलो।
प्रेम की सरिता बहाते चलो।

बढ़ई

मैं बढ़ई हूँ
मोबाइल वाला
मोबाइल युग का
बढ़ईगीरी के साथ
झूठ बोलना भी मेरा पेशा है
इससे पेशे सें बढ़ोत्तरी होती है।
रहता हूँ जार्ज टाउन में
बताता हूँ सहसों
पहले काम वहाँ करता हूँ
जहाँ मिलते है नकद पैसे
जहाँ पैसे मिलने में लगे बरसों
वहाँ बताता हूँ अभी हूँ मैं सहसों
कम से कम
सौ लोगों से
रोज झूठ बोलता हूँ
उनके मन मुताबिक ही
बहाने गढ़कर बोलता हूँ
कम से कम
पचास ग्राहकों का काम
फँसा के रखता हूँ
ताकि कभी न रहूँ बेकार
मकान बनाने वालों के पास
बहुत पैसे होते हैं
उनके पास जितना अधिक पैसा होता है
गुस्सा भी उतना ज्यादा होता है
जब वे मुझ पर गुस्सा उतारते हैं
मैं उनका गुस्सा उड़ा देता हूँ
पर काम अपना नहीं छोड़ता हूँ
अपने काम की बात सुन लेता हूँ
दो दिन काम करके काम आगे बढ़ा देता हूँ
उनका गुस्सा थोड़ा ठंडा कर देता हूँ
फिर दूसरे मकान मालिक के यहाँ पहुचता हूँ
उनके साथ भी यही अपनाता हूँ
बार-बार इसी प्रक्रिया से गुजरता हूँ
पर उनको नहीं समझा पाता हूँ
जैसे आपका मकान बन रहा है
वैसे आपके पड़ोसी का भी
मकान बन रहा है
वैसे आपके दोस्त का भी
मकान बन रहा है
वैसे आपके दुश्मन का भी
मकान बन रहा है
सबका खिड़की दरवाजा
खड़ा करने वाला मैं ही हूँ
मुझे कई जगह पहुँचना है
क्योंकि बढइयों की संख्या कम है
नव मकान मालिकों की संख्या ज्यादा
सब जगह चलाना है
मुझे अपना रंदा
सबके काम पर डाले रहना हे
मुझे अपना फंदा
ताकि मेरा काम अनवरत चलता रहे
बीबी बच्चों का पेट भरता रहे
माता-पिता की भी सेवा होती रहे
अतिथियों का भी सम्मान करता रहूँ
इतनी ऊर्जा के लिए पैसे आपसे पाता रहूँ
इसलिए यह चक्र चलाना जरूरी है
बीच-बीच में गैप करना मजबूरी है
झूठ बोलना सबसे बड़ी लाचारी है
सब तरफ काम की मारा-मारी है
सच कहूँ तो मारा जाऊँ
काम पर से भी भगाया जाऊँ
गाढ़ी कमाई का पैसा भी मारा जाये
बार-बार पछताऊँ पर पार न पाऊँ
अपना सही हाल मैं कैसे सुनाऊँ
फोन पर सच मैं कैसे बोल पाऊँ
अपने ही पैर पर कुल्हाड़ी मैं कैसे मारूँ
इसलिए
मोबाइल युग में मोबाइल पर
झूठ बोल-बोल कर अपना काम फैलाऊँ
जितना ज्यादा झूठ बोलूँ,
उतना ज्यादा काम फैले
दिन-रात मेहनत करके
एक-एक काम पूरा करता जाता हूँ
मोबाइल युग का,
मोबाइल वाला
मैं बढ़ई हूँ।

बरगद का पेड़

बरगद का पेड़
गाँव का सबस, बड़ा बुजुर्ग है।
वह साक्षी है उन पलों का
जब रामदीन गुजरात स, यहाँ आय, थे
अम्बेडकर नगर में अपना बसेरा बसाय, थे।
उनकी तीन पीढ़यों में होन, वाले
शादी, ब्याह, मुंडन, तेरही
सभी संस्कारों का गवाह है।
गवाह है उन दिनों का भी
जब गाँव के सभी लोग
जेठ की दुपहरी में
उसके तल, इकट्ठ, होत, थे।
सत्तू, चना मिल बाँट कर खात, थे
आम का पना पीत, थे।
जिसके यहाँ जा, फल
अधिक होता था
आम, कटहल, जामुन, आँवला
कैंथा, बेल, अमरख, लीची, अमरूद
एक दूसर, का, देत, थे।
आल्हा-ऊदल की वीर गाथायें
बिरहा, फगुआ, लोकगीत, भजन
भुजायें उठा-उठा कर
इसके नीच, ही गात, थे।
होली, दीपावली, कजरी, तीज, छठ
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, महाशिवरात्रिपर्व पर
इसके नीच, ही मेला लगता था।
बच्च, खुश होकर राम सेवक की कचालू
हीरा हलवाई की मिठाई, ईमरती.
जलेबी, लड्डू
शिव चरण की लाई, बताशा, चोटहवा गट्टा
इसके नीच, ही खात, थे।
गाँव की बेटियाँ, बहुएँ, बूढ़ी औरतें,
चूड़ी, बिन्दी, फीता,
सिन्दूर, शीशा, कंघी, महावर
यहीं मेल, में जरूर खरीदती थीं
बिसाती अपना बिसातरवाना लेकर
इसी पेड़ के नीच, छाँव में बैठ जाता था
बालों में लगान, वाली चिमटी
गोहना, बनावटी लम्ब, बालों की चोटी
सभी कुछ उसके पास होता था
कान में पहनन, वाले
तरह-तरह के कर्णफूल, झाला, अँगूठी
मंगलसूत्र, लाकेट, गल, के हार का सेट
महिलायें बड़, शौक स, खरीदती थीं।
होली के अवसर पर
इसी के तले
गीतों का मजमा लगता था
गुड़ और सोंठ वाली गुझिया
सब लोग यहीं खात, थे
भाँग वाला शरबत
खूब आनन्द स, पीत, थे
कजरी के अवसर पर
ठोकवा, गुलगुला, सोहारी
मालपुआ, कचौंड़ी, पकौड़ी
चना की घुघुरी
मिल बाँटकर खात, थे
एक-दूसर, को
अपन, घर बन, हुए
पकवान का स्वाद
चखात, थे
कजरी में झूला
इसके बगल वाले
नीम के पेड़ पर पड़ता था
सब बारी-बारी स, झूलत, थे
झूला डालन, का काम
हरिहर बड़, शौक स, करता था
बरारी, हेंगा, पट्टा
अपन, घर स, लाता था
जिसकी बारी झूल,
पर जब तक न आती
तब तक वह बच्चा
बरगद की बरोंह पकड़कर
झूलता रहता था
तेजी स, झूलन, में कभी-कभी
इधर की डाल स, उधर की डाल तक
पहुँच जाता था।
लड़कियाँ नये-नय, कपड़, पहनकर, खूँब
सज-धजकर
गुड़िया सेर वान, के लिए
इसी के नीच, स, शुरू होन, वाले
पोखर, में डालन, आती थीं
फिर कुछ देर तक बैठकर
कजरी-गीत इसी के नीच, गाती थीं।
सब सखियाँ अपनी नई-नई कजरी गीत
हर वर्ष यहीं सुनाती थीं
उनमें शोभा सबस, अव्वल थी।
कजरी शुरू कर देती थी
बन्द करन, का नाम ही नहीं लेती थी
सब सखियाँ मिलकर
हँसी-ठिठोली इसी के नीचे
करती थीं।
तीज पर सुहागिनें
छठ पर पुत्रवती मातायें
घर के समस्त कार्यों स, फुर्सत हो
इसके नीच, ही पूजा-अर्चना
किया करती थीं
दान-पुण्य का काम भी
यहीं सम्पन्न होता था
नाऊ, धोबी, कोहार, महार
हरवाह, चरवाह, बिसरवार
सभी अपना दान-दक्षिणा
लेन, के लिए
इसके नीच, एक किनार, बैठ जात, थे
पूजा के बाद
देवरानी अपनी जेठानी का
बहुएं अपना सास का
ननद का, सभी बड़, लोगों का
पैर छूकर आशीर्वाद लेती थीं
गाँव की बड़ी बूढ़ियाँ
खूब जोर-जोर स, आशीर्वाद देती थीं
दूधों नहाओं, पूता, फलों
सदा सुहागिन रहो
माँग, कोख भरी रहे
इस मौके पर
महिलायें अपनी पट्टीदारी का
लड़ाई-झगड़ा भी भूल जाती थीं
तीज, त्यौहार पर खुश होकर
गाँव की सभी बड़ी औरतों का
पैर छूकर आशीर्वाद लेती थीं
ऐस, मौके पर पुरूष
वहाँ दिखाई नहीं देते थे
केवल महिलायें ही होती थीं
और होते थे छोटे-छोटे बच्चे
यह बरगद का पेड़
गवाह है उन पलों का भी
जब मदारी अपना खेल
इसी के नीचे दिखाने आते थे
डमरू बजाते थे
डमरू की आवाज सुनते ही
गाँव के बच्चेए बूढ़ेए आदमीए औरत
सभी इकट्ठा हो जाते थे
डमरू की डुगडुगी पर
राम प्यारी रिसियाकर

डॉ रतन कुमारी वर्मा की कविताएं

मायके चली जाती थी
राम प्यारे उसको मनाने जाता था
फिर बड़े प्यार से मनाकर लाता था।
भालू अपना नाच
यहीं दिखाता था
सरकस दिखाने वाले नट-नटी
यहीं अपने करतब से सबको
आश्चर्यचकित करते थे
जादू की बाजीगरी दिखाने वाला जादूगर
हाथ की सफाई से सबको
चमत्कृत करता था
बाइसकोप दिखाने वाला
परबतिया की बिन्दी
जम्मू-कश्मीर की झील
दिल्ली का लाल-किला
आगरा का ताजमहल
बाइसकोप में यहीं दिखाता था
बच्चे बाइसकोप के मुक्के पर
अपना मुँह डाल देते थे
किनारे की रोशनी को
अपने हाथ से ढक लेते थे
बाइसकोप से दिखने वाले
दृश्य का आनन्द लेते थे
किसी की बेटी बहू के लिए
पंचायत होनी हो
तो वह भी इसी के नीचे
होती थी।
गाँव का कोई भी मसला हो
कोई भी झगड़ा हो
सब वहीं पर बैठकर
हल करते थे
पंच जो कहते थे
लोग मान लेते थे
पर वह बरगद का पेड़
आज सूना पड़ा है
उस पर अब केवल
पक्षियों का बसेरा रह गया है
गिध्दए चीलए कबूतरए साँप
सभी का आश्रयस्थल है वह
उसके नीचे अब केवल
बरगद का गूदा पड़ा रहता है
गन्दगी पड़ी रहती है
अब उसके नीचे कोई नहीं जाता
अब वह सुनसान हो गया है
क्योंकि गाँव के लोगों का अब
शहर की ओर पलायन हो रहा है
अब उसके नीचे बैठने की
किसी को फुर्सत नहीं
बच्चे मनोरंजन के लिए
अब टीण्वीण् देखते हैं
टीण्वीण् देखते-देखते
अब सांस्कृतिक टीण्बीण्;क्षयरोगद्ध
के शिकार हो रहे हैं।
उन्हें अब देखने को नहीं मिलता
कब उनकी मातायें
इकट्ठा होकर
अपने से बड़ों का पैर छूकर
आशीर्वाद ले रही हैं
एक-दूसरे के गले मिल रही हैं
गाँव की सभी बड़ी औरतों का
पैर छू रही हैं
जेठ का ध्यान रख रही है
गलती से उनके पैर का
स्पर्श न होने पाये
पद में एक-दूसरे को
पहचान रही हैं
ग्रामीण संस्कृति अब
धीरे-धीरे विलुप्त हो रही है
जो समर्थ हो रहे हैं
वे शहर में बस जा रहे हैं
गाँव अब बनता जा रहा है पुलिन्दा
उन अक्षम व्यक्तियों का
जिनके पास शिक्षा नहीं है
स्वास्थ्य की सुविधा नहीं है
अच्छी आर्थिक आय नहीं है
जो शिक्षित होते जा रहे हैं
वे शहरी बनते जा रहे हैं
गाँव की चौपालें अब
सूनी हो रही हैं
अब किसी के दरवाजे पर
कोई नहीं बैठता
किसी के यहाँ चायए नाश्ता
यूँ ही नहीं करता
अब लोग गुमटी पर
चाय की दुकानों पर बैठते हैं
चाय की चुस्कियों के साथ
राजनीति की गरमागरम
बहसें करते हैं
छोटी-छोटी पार्टियाँ बनाकर
राजनीति करते हैं
बाहर खाना खा लेना
दुकानों पर चाय पी लेना
अब आम बात हो गई है।
अब गाँव का कोई भी व्यक्ति
नहीं पसन्द करता साथ में पोटली बाँधकर
ले जाना
अपने साथ चना-चबैनाए सोहारीए भेली
आम का अचारए सिरका का आमए कटहल
ले जाना
अब तो हर कोई पसन्द करने लगा है
ढाबाए होटल में खाना खाना
ग्रामीण संस्कृति
तेजी से तब्दील हो रही है
शहरी संस्कृति में
जहाँ आध्यात्मिकता बौनी हो रही है
भौतिकता सयानी हो रही है
बरगद का पेड़
सब देख रहा है
आज भी साक्षी है इस पल का
सब चुपचाप सह रहा है
प्रकृति का प्रकोप सहने को
हम भी मजबूर हो रहे हैं।
सोचो ! जब एक बरगद का पेड़
हमें तीन पीढ़ियों तक आश्रय दे सकता है
तो क्या हमारा फर्ज नहीं बनता
हम सब भी एक-एक पेड़ लगायें
बरगदए पीपलए नीम या
कोई भी पेड़ लगायें
जहाँ सभ्यता और संस्कृति
हमारी अक्षुण्ण बनी रहे
जिससे हम भावी पीढ़ी के जीवन को
सुरक्षित और खुशहाल बनायें।

रिश्वतखोरी

रिश्वतखोरी की जड़ हैं मंत्री साहब
क्योंकि मंत्री साहब
मंत्री पद पाने के लिए
जितना पैसा देते हैं
पैसे के अनुरूप
विभाग व पद मिलता है
मजबूरी है
अगर अपने विभाग में
अपने चंदे की धनराशि
निर्धारित नहीं कर दें
तो पैसा कहाँ से आये
कैसे एकत्रित हो घ्
इस जटिल समस्या का निदान
बहुत कठिन है
पर हल तो निकलना ही है
जब मंत्री को यह पैसा ऊपर देना है
तो इकट्ठा करने की जिम्मेदारी अधिकारी
पर आती है
अधिकारी क्या करे
मंत्री जी को कैसे खुश करे
वह बाबू को नियुक्त करता है
बाबू चपरासी को माध्यम बनाता है
क्योंकि किसी के आगमन पर
प्रथम मुलाकात चपरासी से होनी है
वह फाइल उठाने की अपनी फीस अलग ल
`ता है
बाकी काम बाबू करता है
किसी से पैसा कैसे निकालना है
यह काम बाबू अच्छे से जानता है
चार बार दौड़ाने पर
बड़े-बड़े के सिध्दांत डगमगाने लगते हैं
सबकी ना ना हाँ में बदलने लगती हैं
बाबू के पैसे में सबकी हिस्सेदारी सुनिश्चित
होती है
प्रतिशत के आधार पर लिफाफा तैयार
होकर
अपने आप पहुँच जाता है
तभी तो बाबू बेहिचक
तंग करने के बाद काम का रेट बताता है
बदनामी मोल लेने में नही डरता है
किसी भी अधिकारी से बिल्कुल बेखौफ
रहता है
उस रेट के नीचे कोई समझौता नहीं
उसके खिलाफ कहीं सुनवाई नहीं
कोई अधिकारी या मंत्री जी
बाबू के खिलाफ शिकायत सुने कैसे
अपने ही फैसले के खिलाफ आदेश दें कैसे
सबसे पहले तो अपने पैर में कुल्हाडी मारें
तब तो दूसरे के सुविधा शुल्क में कटौती करें
बस यह परम्परा यूँ ही
सदा से चलती आई है
चल रही हैए रूके कैसे घ्
इसी के दम पर तो आज तक
सरकारें चल रही हैं
शासन हो रहा है
सामने से विनम्रता
हाथ जोड़कर वोट की भिक्षा
पीछे से कटुता
बदले में कुर्सी की मिलती सुविधा
बस समय-समय पर
इसके नाम बदलते रहे हैं
कभी 'टैक्स' के नाम पर अंग्रेजी राज में
जबरन उगाहा गया
कभी रिश्वत के रूप में भारतीय राज में
जबरन चूसा गया
पर सबका खामियाजा
सदा भुगतती रही है जनता
भोली-भाली जनता
जो समझती है
मंत्री जी हमारे हैं
हमारे क्षेत्र के हैं
हमारे विभाग के हैं
हमारा हित चाहते हैं
वह समझ नहीं पाती है
किस छद्म से मंत्री जी
हमारा अहित कर रहे हैं
रिश्वतखोरी की जड़ को
जीवित रखे हुए हैं
इन्हीं के बहाने
अधिकारीए कर्मचारी
सभी-मौज कर रहे हैं
फल-फूल रहे हैं
आय से अधिक व्यय कर रहे हैं
इस चक्की में पिस रही है
केवल भोली-भाली जनता
जो अपनी मेहनत की कमाई खाती है
गाढ़ी कमाई का अच्छा खासा अंश
रिश्वत में देने को मजबूर हो जाती है
दिखावे के लिए
जोरदार भाषण देने से
सरकारी कागजों की तेजी से आवा-जाही से
यह समाप्त होने वाली नहीं है
इसके लिए सबसे पहले
अपने ईमान से मंत्री जी
ईमानदार बन जायें
डर के मारे अधिकारी भी
ईमानदार बन जायेंगे
बाबू की औकात नहीं है
कि वह ईमानदार न बने
चपरासी की क्या बिसात है
जो ईमानदारी को न ढोये
सबसे पहले आप ईमानदार बन जायें
आप ईमानदारी का
जीती-जागती मिशाल बन जाये
जब तक राजनीति नहीं स्वच्छ होगी
तब तक जनता को न्याय नहीं मिलेगा
हर जगह बस अन्याय ही अन्याय होगा
भयमुक्तए भ्रष्टाचार मुक्तए अपराध मुक्त
शिक्षायुक्त का सपना साकार नहीं होगा
जिस दिन जनता की पीड़ा को
आप समझ लेंगे
खुद को पीड़ा सहने लायक बना लेंगे
सुविधा की लालच का परित्याग कर देंगे
रिश्वतखोरी जड़ से अपने आप चली जायेगी
चली जायेगी।

डॉ रतन कुमारी वर्मा का जीवन वृत्त

डॉ. रतन कुमारी वर्मा

जन्म स्थान : ग्राम - करीम पट्टी , जिला - अम्बेडकरनगर , उत्तर प्रदेश।

जन्म तिथि : 2 जुलाई 1964 ई0 ।

माता का नाम : (स्व0) श्रीमती शान्ति वर्मा

पिता का नाम : श्री विद्यासागर वर्मा

शिक्षा : एम. ए. (राजनीति विज्ञान) , एम. ए. (हिन्दी) , पीएचडी - हिन्दी ।

प्रकाशन : पुस्तक - महिला सशक्तिकरण : चिंतन की नई दिशाएँ , स्त्री मुक्ति का संघर्ष : सेवा सदन , महिला साहित्यकारों का नारी चित्रण , हिन्दी आलोचना के तीन आयाम, हिन्दी के साहित्यकार(लेखक) , महात्मा गाँधी : शाश्वत चिंतक , प्रतिनिधि हिन्दी कहानियाँ , भारतीय संदर्भ में दलित विमर्श (हिन्दी वाल्यूम) , Bhartiya SandaRh mein Dalit Vimarsh (English Volume), (सम्पादक) , मध्यकालीन काव्य, मध्यकालीन काव्य परिचय , सृजनदीप, सृजन पथ, (सह- सम्पादक), सृजन सरिता, सृजन प्रवाह, सृजन दीप, सृजन पथ, अभिव्यक्ति, श्रेष्ठ इक्यावन कविताएँ, वक्त की आवाज , ग्लोबल साहित्य मंजरी, साहित्यकारों की महफ़िल, एहसास- ए - जिन्दगी, कलम बोलती है, नमामि माँ भारती, वंदे तू नारायणी (साझा काव्य संग्रह)

पत्रिका : सृजन (सम्पादक) , सृजन, युवा चेतना (सह - सम्पादक), सृजन आस्ट्रेलिया अन्तर्राष्ट्रीय पीयर रिव्यूड ई पत्रिका (उप सम्पादक) , विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पत्र - पत्रिकाओं - वीणा , मंथन , साकूरा की बयार , तख्तोताज ,शहर समता आदि में तथा विभिन्न पुस्तकों में अनेक कविता एवं कहानियाँ प्रकाशित शोधपत्र : विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पत्र - पत्रिकाओं में 100 से अधिक शोधपत्र एवं आलेख प्रकाशित ।

सम्मेलन / संगोष्ठी : 150 से अधिक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार / बेविनार में सहभागिता एवं शोधपत्र प्रस्तुत , विभिन्न राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय कवि सम्मेलन में प्रतिभागिता , आकाश वाणी इलाहाबाद द्वारा वार्ता का प्रसारण, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन ।

प्राप्त पुरस्कार एवं सम्मान : स्त्री मुक्ति का संघर्ष सेवासदन पुस्तक पर 2023 का आचार्य अकादमी चुलियाना , रोहतक द्वारा भीमराव अंबेडकर समानता एवं समता पुरस्कार ,हिन्दुस्तानी एकेडमी , प्रयागराज द्वारा महिला सशक्तिकरण : चिंतन की नयी दिशाएँ पुस्तक पर महादेवी वर्मा पुरस्कार , सृजन आस्ट्रेलिया अन्तर्राष्ट्रीय ई पत्रिका द्वारा साहित्यिक योगदान हेतु प्रशस्ति पत्र , राष्ट्रीय सेवा योजना, इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा सर्वश्रेष्ठ कार्यक्रम का सम्मान , विभिन्न संस्थाओं द्वारा विभिन्न क्षेत्रों - साहित्य, समाज सेवा, स्वास्थ्य जागरुकता एवं पर्यावरण संरक्षण में उत्कृष्ट योगदान हेतु प्रशस्ति पत्र ।

शोधकार्य : महिला लेखिकाओं की कहानियों में नारी चित्रण ।

सम्प्रति : एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष - हिन्दी विभाग , जगत तारन गर्ल्स पी जी कालेज , इलाहाबाद विश्वविद्यालय , प्रयागराज - 211002 वर्तमान में एक कहानी संग्रह, एक कविता संग्रह तथा एक आलोचनात्मक पुस्तक - हिन्दी साहित्य के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में नारी पुस्तक के प्रकाशन के लिए प्रयासरत ।

ईमेल : drratankmverma.jtdc@ gmail.com

मोबाइल नंबर : 9415050933 ।

डॉ रतन कुमारी वर्मा की कहानियां

बुलंदियाँ

सितारा देवी का ससुराल की दहलीज पर पाँव पड़ते ही उसकी सुन्दरता की चर्चा चारो ओर होने लगी। सितारा देवी बहुत सुन्दर थी। उनके नाक-नक्श सभी बहुत सुन्दर थे। ओठ गुलाब की पंखुड़ियों के समान गुलाबी थे। मासूम चेहरा, लम्बा शरीर, गोरा छरहरा बदन देखकर लोग तारीफ करते न थकते थे। गाँव में उसकी सुन्दरता की विशेष रूप से चर्चा थी कि नम्बरदार की छोटी बहू सितारा देवी सबसे अधिक सुन्दर हैं।

सितारा देवी की शादी जिस शख्स से हुई थी उनका नाम था महेन्द्रनाथ। महेन्द्रनाथ भी अपने समय के खूबसूरत युवक थे। पढ़ने में भी बहुत तेज थे। उनकी कुशाग्र बुद्धि को देखते हुए परिवार में, गाँव में, सबको यही उम्मीद थी कि निश्चित ही एक दिन यह लड़का बड़ा अधिकारी बनेगा। पिता सामान्य किसान थे। कुल दस बीघा खेत था। खेती के बल पर पढ़ाई संभव न थी। इसलिए पिता शंकर लाल ने चार भैंसे पाल रखी थी कि उनका दूध बेचकर कुछ पैसा निकल आया करेगा। इससे महेन्द्रनाथ को पढ़ाने में मदद हो जायेगी। बड़े भाई बृजेन्द्रनाथ इण्टरकालेज में शिक्षक की नौकरी करते थे। गाँव के पास के ही विद्यालय में पढ़ाते थे। उनका बहुत बड़ा सपना था कि मेरा छोटा भाई जरूर बड़ा अधिकारी बने। इसलिए बड़े मन से महेन्द्रनाथ को पढ़ा रहे थे। हाईस्कूल एवं इण्टर की परीक्षा महेन्द्रनाथ ने प्रथम श्रेणी में यू0पी0 बोर्ड से उत्तीर्ण की। 1975 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी0ए0 प्रथम श्रेणी में पास किया। उनका ख्वाब बहुत ऊँचा था। वे सीधे आई0ए0एस0 बनना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने दिन-रात अथक परिश्रम किया। प्रारम्भिक परीक्षा बड़ी आसानी से पास कर लेते थे। मुख्य परीक्षा के लिए उन्होंने दो विषय चुन रखे थे। राजनीति विज्ञान एवं लोक प्रशासन। राजनीति विज्ञान एवं लोक प्रशासन में प्लेटो से लेकर आधुनिक विश्वविद्यालय में पढ़ाने वाले लेखकों तक की किताबों का संग्रह उनके पास था। राजनीति का विद्यार्थी होने के नाते इंग्लैण्ड, फ्रांस, चीन, जापान, इटली, रूस, जर्मनी, अमेरिका का संविधान उन्हें रटा हुआ था। जिस किसी से भी बात करते तो उनकी वार्ता भी अंतर्राष्ट्रीय स्तर की होती थी। लोकप्रशासन में भी उनकी विशेष अभिरूचि थी। प्रशासकीय ढ़ांचे की भी उनको विधिवत जानकारी थी। सरकारी नीतियों एवं योजनाओं के विषय पर अक्सर बात किया करते थे। उनको हमेशा इस बात का कष्ट था कि सरकार किसानों के साथ न्याय नहीं करती है। देश का कर्णधार जवान एवं किसान ही है। भारत में न तो जवानों की अच्छी स्थिति हैं और न ही किसानों की। जवान देश की बेदी पर अपना प्राण न्यौछावर करता है। देश की रक्षा करते हुए अंगविहीन हो जाता है लेकिन सरकार जवानों के प्रति संवेदनशील नहीं है। जवानों के शहीद हो जाने पर उनकी पत्नी, छोटे-छोटे बच्चों एवं बूढ़े माता-पिता पर ध्यान नहीं देती है। शहीदों के समर्पण के बदले में उन्हें सुविधा कम मिलती है। यही हाल किसानों का है। किसान दिन-रात मेहनत करके अन्न पैदा करता है। कभी ओलावृष्टि का शिकार हो जाता है तो कभी अतिवृष्टि से फसल को नुकसान पहुँचता है। कभी सूखा पढ़ने से फसल की पैदावर कम हो जाती है, किसान निरन्तर अभावों एवं कष्टों से जूझता रहता है। सरकार के द्वारा किसानों को बीज एवं खाद पर बहुत कम सब्सिडी दी जाती है। फसलों का समर्थन मूल्य भी बहुत कम घोषित किया जाता है। चाहे रबी की फसल हो या खरीफ की हो लागत निकलना भी मुश्किल हो जाता है। कभी किसान की लागत निकल आती है तो मंदी में वह भी डूब जाती है। मेहनत तो बेकार जाती ही है। ऊपर से जब भी गेहूँ या धान की कीमत बढ़ाने की बात आती है तो चारो तरफ यह हल्ला होने लगता है कि गरीबों का निवाला छिन जायेगा। भूखों मरने लगेगे। गरीबों की स्थिति बहुत खराब हो जायेगी। गेहूँ या धान की कीमत न बढ़ाये जाने से किसान की कमर टूट जाती है, उनकी स्थिति कितनी खराब हो जाती है। इसकी चिन्ता सरकारों को नहीं होती है। बड़ी-बड़ी कम्पनियों के व्यावसायिक उपक्रमों को सरकार बड़ी उदारता से सब्सिडी एवं अनुदान देती है। तब गरीबी का हवाला नहीं देती है। बात किसान के हित की हो तो गरीबी का कार्ड खेलने से सरकार नहीं चूकती है। नीतियाँ ऐसी भी तो बनाई जा सकती है जिसमें किसानों का भी हित सुरक्षित हो और गरीबों का भी ध्यान रखा जाय। सरकार गरीबों की जो मदद करना चाहती है उसको सुविधाएं उपलब्ध कराकर सीधे मदद कर सकती है। किसानों के फसलों के नुकसान की भरपाई बीमा योजना के द्वारा कर सकती है। फसल के नुकसान होने पर ऋण माफ कर सकती है। नगद सहायता की राशि प्रदान कर सहायता कर सकती है ताकि किसान आत्महत्या करने को मजबूर न हो। उनके मन में यह चिन्तन मनन चलता रहता था। वे हमेशा सोचते रहते थे कि किसी तरह आई0ए0एस0 बन जाऊँ तो सरकारी मशीनरी का हिस्सा बनूँ। नीति निर्धारण में जवानों एवं किसानो के हित की बात करूँ। देश के जवानों के प्रति उनके हृदय में अत्यधिक सम्मान था। सामान्य ज्ञान की तैयारी के लिए भी समसामयिक घटनाओं पर बहुत ध्यान देते थे। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं धर्मयुग, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, हिन्दुस्तान टाईम्स इत्यादि का अध्ययन करते रहते थे। उन्होंने तीन बार मुख्य परीक्षा उत्तीर्ण की। तीन बार साक्षात्कार में सम्मिलित होने का मौका मिला। हर बार यही उम्मीद रहती कि इस बार आई0ए0एस0 में जरूर चयन हो जायेगा। कोई भी विभाग मिले कोई भी काडर मिले पर जब इतने नजदीक पहुँच रहे हैं तो सफलता मिल ही जायेगी।

लेकिन शायद भाग्य ने साथ नहीं दिया। कर्म तो करते रहे लेकिन आशानुरूप फल नहीं मिल सका। अन्ततः तीसरी बार भी चयनित न हो सके। जैसा होना स्वाभाविक है वैसा ही हुआ। बहुत हताशा हुई। अब उनका मन नहीं लगता था।

महेन्द्रनाथ बहुत ही अक्खड़ और स्वाभिमानी स्वभाव के थे। आई0ए0एस0 में चयन न हो पाने पर किसी भी नौकरी को करने से इन्कार कर दिया। घर के लोग चाहते थे कि यदि आई0ए0एस0 नहीं बन पाये तो न सही, अन्य परीक्षाएं दें जिसमें सफलता मिल जाये वही नौकरी कर ले ताकि जीवन में रोजी-रोटी की समस्या न हो। पर महेन्द्रनाथ के मन में तो देश का स्वप्न चल रहा था। वह रोजी-रोटी के लिए छोटी-मोटी नौकरी से समझौता नहीं कर सके। अन्ततः उन्होंने किसान बने रहना ही स्वीकार किया। बड़े गर्व से कहते कि मैं भारत का आजाद किसान हूँ। भारत में भ्रष्टाचार किस तरह व्याप्त है मैं उसका हिस्सा नहीं बनना चाहता। यदि मैं भ्रष्टाचार को रोक नहीं सकता तो भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने वाला काम भी नहीं कर सकता। न ही मैं भ्रष्ट अधिकारियों की चापलूसी कर सकता हूँ। इसलिए मेरे लिए किसान पुत्र बने रहना ही अच्छा है।

उनकी शादी तो हो ही चुकी थी। असफल होने पर अन्ततः वे गाँव लौट गये। आज भी जीविका का आधार उनके पास खेती ही था। उसी से ही काम चलाने लगे। परन्तु उनका मन खेती में नही लगता था। उनके मन में अब भी देश की चिन्ता लगी रहती थी। पन्द्रह वर्षो तक इलाहाबाद में रहकर जो अध्ययन किया था वहीं बातें दिमाग में गूँजती थी। सब सोचते थे कि पत्नी सितारा देवी अत्यन्त सुन्दर है। धीरे-धीरे सब भूल जायेगा किन्तु ऐसा न हुआ। वह केवल घर गृहस्थी में सीमित होकर नहीं जी सकते थे। उन्होंने आस-पास के गांव के बच्चों को पढ़ाना शुरू कर दिया। उनका मार्गदर्शन करते। जो भी बच्चे या अभिभावक अपने बच्चे की पढ़ाई के विषय में पूछने आते, बहुत ही विस्तार से उसको समझाते। उस समय आस-पास के गांव में वे ही सबसे पढ़े लिखे व्यक्ति थे। ऊपर से उन्हें प्रतियोगी परीक्षाओं का गहरा ज्ञान था। यह जरूर था कि वे सफल नहीं हुए थे। पर भावी पीढ़ी का मार्गदर्शन में कोई कोर-कसर न छोड़ते थे। वस्तुतः महेन्द्रनाथ हिन्दी माध्यम से पढ़े थे। उनकी अंग्रेजी कमजोर थी। संभवतः इसीलिए वे साक्षात्कार में सफल नहीं हो पाते थे। बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलाने की हमेशा सलाह देते थे। शिक्षा से ही जीवन में बदलाव आ सकता है। ऐसा उनका अमिट विश्वास था। आस-पास के लोग उनका खूब मजाक भी बनाते थे कि इतना पढ़ लिखकर भी क्या किये। आखिर आकर गाँव में आकर खेती ही तो कर रहे हैं। अन्ततः तो किसान ही ठहरे। जो उनके प्रतिद्वन्दी थे या ईर्ष्या करने वाले थे ऐसा सोचकर वो प्रसन्न होते थे या अपने मन को बुझाते थे। गाँव में भी जब वे किसी से बात करते तो विभिन्न देशों का हवाला देते हुए बात करते। गांव में जो किसान अपने देश के सिवाय दूसरे देश का नाम तक ना जानते थे वे धीरे-धीरे विभिन्ने देशों का नाम जानने लगे। तब न तो दूरदर्शन था न ही मोबाइल का युग था। कोई भी जानकारी किसी निश्चित व्यक्ति के माध्यम से ही प्राप्त होती थी। जिन अभिभावकों को अपना बच्चा पढ़ाना होता था वे महेन्द्रनाथ को बहुत आदर देते थे। जिनको उनसे कोई स्वार्थ नहीं था या उनकी बात को नहीं समझ पाते थे वे उनको सनकी कहने लगे थे। कहते थे काम तो कुछ करते नहीं है केवल दिन-रात बकवास की बातें करते रहते हैं।

समय बीतता गया। धीरे-धीरे उनके तीन बच्चे हो गये। एक बेटी और दो बेटे। बेटी का नाम रखा अर्पणा। जब उनके बेटी पैदा हुई तो गांव वालों ने खूब खुशियाँ मनाई। कहा कि अब पता चलेगा कि बेटी का भार कैसा होता है। सबको बहुत शिक्षा देते रहते हैं जब अपनी बेटी को पढ़ायेंगे तो पता चलेगा। फिर दोनो बेटे पैदा हुए सुदीप और सुशील। उन्होंने तीनों बच्चों की शिक्षा पर बहुत ध्यान दिया। वे हमेशा बच्चों को बैठाकर पढ़ाते रहते थे। पत्नी सितारा देवी भी कभी-कभी नाराज होती कि काम नहीं करते हो बच्चों का खर्च कैसे चलेगा। पर वे इस बात पर ज्यादा ध्यान नहीं देते थे। कई बार छोटा-छोटा कृषि संम्बन्धी व्यवसाय करने की कोशिश की परन्तु उसमें भी उनको सफलता हाथ न लगी। बड़ी तंगी के साथ दिन गुजारने पड़े। उनकी बदहाली को देखकर गांव के लोग खुश होते थे। उनके साथ के पढ़ने वाले कई लोग विभिन्न शहरों में ऊंची नौकरी कर रहे थे। रमेश बैंक में अधिकारी था तो महेश प्रोफेसर और सोमेश इंजीनियर । वे कुछ नहीं बन सके थे। उन्होंने हार नहीं मानी थी। उन्होंने ठान लिया था कि भले ही मैं आई.ए.एस. नहीं बन सका लेकिन मैं अपने अपने बच्चों को जरूर बनाऊंगा। उनके जो साथी बाहर नौकरी कर रहे थे वे आनन्द का जीवन बिता रहे थे। उनके पास जीवन की सुख सुविधाओं के पर्याप्त साधन थे। वे अपने बच्चों को लेकर आश्वस्त थे कि उनके बच्चों को अच्छी शिक्षा मिल रही है तो वे निश्चित ही वे बनेंगे ही। लेकिन कुछ समय के बाद ऐसा समय आया कि उनके सहपाठी के बच्चे उतना अच्छा नहीं कर पाये। शिक्षा प्राप्त कर के सामान्य नौकरी में ही रह गये। धीरे-धीरे महेन्द्रनाथ के तीनों बच्चे सफल हो गये। बच्चों ने भी शिक्षा के लिए बहुत संघर्ष किया। बच्चों मे सबसे बड़ी बेटी अर्पणा को महेन्द्रनाथ डाक्टर बनाना चाहते थे। वह सी.पी.एम.टी. की परीक्षा पास कर के डाक्टर बन गयी। फिर आगे चलकर उसको पी.जी. में भी प्रवेश मिल गया। वह प्रसिद्ध स्त्री रोग विशेषज्ञ बन गई। उसकी शादी भी डाक्टर लड़के के साथ बहुत आसानी से हो गई। दहेज के लिए उन्हें बिल्कुल नहीं परेशान होना पड़ा दामाद आशुतोष उनका बहुत सम्मान करता था कि उन्होंने इतने कम आर्थिक संसाधन होते हुए भी अपनी बेटी को डाक्टर बनाया। एक समय ऐसा भी आया जब उनके दोनो बेटे आई.ए.एस. की परीक्षा में सफल हो गये। क्षेत्र में सफलता की दुन्दुभि बज गई। यह खबर आस-पास के क्षेत्र में बहुत तेजी से फैली। उसके साथ महेन्द्रनाथ का इतिहास भी फैला कि वही महेन्द्रनाथ जो सफल नहीं हुए थे। आई.ए.एस. नहीं बन पाये थे उन्हीं के दोनो बेटे आई.ए.एस. में चयनित हुए हैं। जो लोग उनकी तरफ देखते नहीं थे वे भी बधाइयां देने आने लगे। बधाई देने वालों का ताँता लग गया। फिर सब अपने-अपने मन की भड़ास निकालने लगे। कोई कहता कि मैं तो सोचता था कि इनके बच्चे जरूर एक दिन बड़े अधिकारी बनेंगे क्योंकि महेन्द्रनाथ हमेशा बच्चों को पढ़ाते रहते थे। उन पर ही उनका सारा ध्यान था। कोई कहता था कि बच्चे बहुत होनहार थे। उनको बनना ही था। सब तरफ उनकी प्रशंसा गूँजने लगी। जिस व्यक्ति को समाज का सबसे बेकार व्यक्ति समझा जाता था आज उसी को सब अपना आदर्श मानने लगे। अब लड़कों की शादी के लिए क्षेत्र के भी और दूसरे क्षेत्र के भी बड़े-बड़े अधिकारी संपर्क करने लगे। लड़को को देखने के लिए महेन्द्रनाथ के घर जाते तो ढेर सारी मिठाईयां और फल लेकर जाते। दहेज के बड़े-बड़े प्रलोभन देते। कहने का मतलब यूं कि उनके लड़कों को खरीद लेना चाहते थे। बड़े-बड़े नेता अफसर सब उनके दरवाजे का चक्कर काटने लगे। जो लोग कभी महेन्द्रनाथ से बात करना नहीं पसन्द करते थे वे लोग उनके तलवे चाटने लगे। सर झुकाकर उनके सम्मान में खड़े होने लगे। अन्ततः ईश्वर ने वह दिन दिखाया कि सितारा देवी और महेन्द्रनाथ बच्चों की सफलता से गद्गद् थे। जीवन भर सहा गया अपमान कष्ट उनको भूल गया। बच्चों को पालने के लिए सितारा देवी ने भी अथक परिश्रम किया। घर का सारा कार्य वह स्वयं करती थीं। बच्चों से कभी भी काम नहीं लेती थीं। उनको सदा पढ़ने के लिए प्रेरित करती थीं। आज उनको अपने जीवन भर के सींचे गये वृक्ष के फल लगे दिखाई दिये। वे अपने को सफल समझने लगीं कि मैं इतने सफल और होनहार बच्चों की माँ हूँ। माँ होने पर असली गर्व उन्हें अब हुआ।

महेन्द्रनाथ ने अपने लड़कों के लिए अन्ततः आई.ए.एस. लड़कियों का ही चयन किया। बड़े-बड़े दहेज एवं प्रलोभनों को दर किनार कर दिया। करोड़ों करोड़ का प्रस्ताव लेकर उनके आगे पीछे घूमने वाले लोग भौचक्के रह गये। जिन लोगों को लग रहा था कि पैसे के दम पर वे उनके लड़कों को खरीद लेंगे वे अपने आप को मायूस महसूस कर रहे थे। दोनों लड़कों की खूब धूमधाम से शादी हुई। बड़ी बहू प्रतीक्षा और छोटी बहू उदीशा ने ससुराल की दहलीज पर पहुंचकर जब सास सितारा देवी और ससुर महेन्द्रनाथ के पांव छुए तो वे दोनो असीमित आनन्द से आनन्दित होने लगे।

एक समय वह था जब वे स्वयं आई.ए.एस. नहीं बन सके थे । उसका मलाल उनके मन में हमेशा बना रहता था। सारा समाज भी उनको इसी नजरिये से देखता था। एक समय अब आया कि दोनों आई.ए.एस. बहुए उनके चरणों में नतमस्तक हैं और वे उन्हें भूरि-भूरि आशीर्वाद दे रहे हैं। उनके मन में उम्मीद जगी कि एक दिन निश्चित ही मेरी ये सन्तानें जवानों एवं किसानों के हित के लिए नीति निर्माण एवं क्रियान्वयन में भागीदार बनेंगे। महेन्द्रनाथ के बड़े भाई बृजेन्द्रनाथ के मन में भी यह कष्ट था कि उनका भाई बड़ा अधिकारी नहीं बन पाया लेकिन महेन्द्रनाथ के बच्चों की सफलता से वे भी अभिभूत थे। महेन्द्रनाथ को पढ़ाने में बड़े भाई बृजेन्द्रनाथ की पत्नी सावित्री देवी की भी बहुत बड़ी भूमिका थी। बच्चों की सफलता से वे भी गद्गद् थी। महेन्द्रनाथ की मां लक्ष्मी देवी का हृदय फूले नहीं समा रहा था। अपने पोते-पोती की सफलता का गुणगान करते न थकती थी। ऐसा लग रहा था कि मारे खुशी के उन लोगों की उम्र और बढ़ गई है। आस-पास के क्षेत्र के लिए वह परिवार अब एक मिसाल बन चुका था।

हम मजदूर

हम जा रहे हैं अपने गाँव।
नहीं मिली यहाँ हमको कहीं ठाँव,
यहाँ आये थे हम बड़े अरमानों से,
अरमानों का आसमान साथ लिये,
जा रहे हैं टूटी हुई आशा से,
मन में बिखरी हुई निराशा से,
फिर भी उम्मीदों का दिया जलाये,
गाँव में अपने होंगे हाथ फैलाये,
अपनों में ही हम जीवन तलाश लेंगे।
मुम्बई, कलकत्ता, दिल्ली, चेन्नई
लौटकर अब नहीं आयेंगे।
बाप-दादा ठीक ही कहते थे
अच्छा नहीं है परदेश को जाना
लेकिन तब समझ में नहीं आता था
अब जब वापस जा रहे हैं
तब समझ में आ रहा है
क्यों कहते थे बड़े-बूढ़े

पृष्ठ 1 का शेष...

मेरा लेखकीय संघर्ष......

जी भी थे। उन्होंने बडे ़आत्मविश्वास से कहा - मैडम, आप कुछ लिखती भी होंगी। मैंने बडे ़संकोच के साथ बताया कि लिखती तो हूँ, परन्तु अभी तक कहीं कुछ प्रकाशित नहीं हो पाया है। क्योंकि मैं कहीं कुछ सम्पर्क नहीं कर पाती हूँ। कुछ कविता, कहानियाँ लिख लेती हूँ। उन्होंने आश्वासन दिया कि मैं आपकी रचनाएँ प्रकाशक तक पहुँचा दिया करूँगा। उन्होंने बताया कि हमारे एक मित्र हैं उमेश श्रीवास्तव जी। वे एक समाचार पत्र निकालते हैं।वे अवश्य प्रकाशित करेंगे। विवेक सत्यांशु जी के प्रयास से वर्ष २००४ , सितम्बर माह के अंक में हमारी एक कविता - सत्य का संघर्ष प्रकाशित हुई। इसके लिए मै विवेक सत्यांशु एवं उमेश श्रीवास्तव जी के प्रति हार्दिक रूप से कृतज्ञ हूँ।

कविता के प्रकाशित होने पर हमें अतीव प्रसन्नता हुई जैसा कि सभी लेखकों को होता है। परन्तु इसका बहुत ही विपरीत प्रभाव हमें झेलना पड़ा ऐसा लगा कि जैसे किसी व्यक्ति विशेष के खिलाफ हमने कोई वैयक्तिक कविता लिख दी। किसी भी कविता, कहानी का जन्म अनुभव से ही होता है, ऐसा मेरा विश्वास है।सत्य का संघर्ष कविता भी अनुभूतियों का पुंजीभूत रूप है। इस घटना के बाद कुछ दिन तक फिर कुछ नहीं प्रकाशित करवाया। फिर आलोचनात्मक पुस्तकों की तरफ ध्यान दिया। धीरे धीरे फिर कुछ आलोचनात्मक पुस्तकें, विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में कविता एवं कहानियाँ प्रकाशित हुईं। इस बीच लगभग १० पुस्तकें, जिसमें ५ लेखक एवं ५ सम्पादक के रूप प्रकाशित हुईं,जिनमें हिन्दी आलोचना के तीन आयाम, महिला साहित्यकारों का नारी चित्रण , महिला सशक्तिकरण चिंतन की नयी दिशाएँ , हिन्दी के साहित्यकार , स्त्री मुक्ति का संघर्ष सेवासदन (लेखक) प्रतिनिधि हिन्दी कहानियाँ , भारतीय संदर्भ में दलित विमर्श (हिन्दी वाल्यूम) , Bhartiya SandaRh Mein Dalit Vimarsh (हुंत्वेप न्न्दत्ल्स) , महात्मा गॉधी शाश्वत चिंतक (सम्पादक) के रूप में पुस्तकें प्रकाशित हुईं ।परन्तु सबसे बड़ा मोड़ तब महसूस हुआ जब २०२० में एक आलोचनात्मक कृति - महिला सशक्तिकरण : चिंतन की नयी दिशाएँ प्रकाशित हुई और हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयागराज द्वारा महादेवी वर्मा पुरस्कार के लिए चयनित की गई। १००००० एक लाख रुपये पारितोषिक के रूप में सम्मान स्वरूप प्राप्त हुआ। इससे लेखन का हौंसला बढ़ा।इस बीच विभिन्न साझा काव्य संग्रह - अभिव्यक्ति, श्रेष्ठ इक्यावन कविताएँ, सृजन पथ, सृजन दीप, सृजन प्रवाह, वक्त की आवाज़, साहित्यकारों की महफ़िल , ग्लोबल साहित्य मंजरी , एहसास - ए - जिंदगी , कलम बोलती है, नमामि माँ भारती , वंदे तू नारायणी , प्रयाग के साम्प्रतिक कवि आदि में विभिन्न कविताएँ प्रकाशित हुईं। कुछ कहानियाँ भी विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित हुईं। गांधी जी के जीवन पर केन्द्रित पुस्तक - महात्मा गाँधी : शाश्वत चिंतक का सम्पादन का कार्य सम्पन्न किया, जिसमें बहुत ही मूर्धन्य गाँधी वादी विचारकों का आलेख संग्रहीत है। शीघ्र ही एक कथा संग्रह तथा एक कविता संग्रह प्रकाशित करवाने के लिए प्रयास रत हूँ। साथ ही एक इतिहास की पुस्तक - हिन्दी के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में नारी पुस्तक के लेखन में अपना पूरा प्रयास कर रही हूँ ।लेखन से बहुत ही आत्मिक संतोष प्राप्त होता है। इससे लिखने की चेष्टा सदैव बनी रहती है। कोशिश है कि कुछ अच्छा लिख सकूँ। दीपावली के अवसर पर दूसरी आलोचनात्मक पुस्तक - स्त्री मुक्ति का संघर्ष सेवासदन को भी अखिल भारतीय स्तर पर पुरस्कृत होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आचार्य अकादमी चुलियाना, रोहतक द्वारा बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर समानता एवं समता पुरस्कार का प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। यह पुस्तक वेश्या नारियों के जीवन के उत्थान और समाज में समानता के अधिकार पर केन्द्रित है। इस पुस्तक के पुरस्कृत होने से निश्चित रूप से लेखन में आत्मविश्वास की वृद्धि हुई है और अच्छा कुछ लिख पाने के लिए मन में उत्साह जगा है।

ईश्वर से कामना है कि आप सभी के शुभकामनाओं और आशीर्वाद से मैं लेखकीय कर्म के प्रति सजग रहूँ।

डॉ रतन कुमारी वर्मा की कहानियां

अच्छा है घर में सूखी रोटी खाना
अच्छा नहीं है परदेश को जाना
तब भौतिकता की आँधी में
आँखों की रोशनी चौंधियाँ गई थी
शहर आने को व्याकुल हो आई थी।
अब कई पीढ़ियों तक यह दर्द याद रहेगा
पराये मुल्क में कोई नहीं होता है अपना
अपने गाँव में सब अपने होते हैं।
जिसके पास जो होता है
सब मिल-बाँटकर खा लेते हैं।
अगर किसी के खेत मे
साग-सब्जी अधिक हो गई,
घर में दूध, दही मट्ठा अधिक हो गया,
उसको तुरन्त बाजार में बेचने
कोई नहीं ले जाता है
अपने आस-पास, पास-पड़ोस में,
अगल-बगल में जिसके यहाँ नहीं होता है
उसको खिलाकर प्रसन्नता का अनुभव करते हैं।
हमारी कृषि संस्कृति
अभाव में भी हमको दान करना सिखाती है।
मनुष्य का मान-सम्मान आदर करना
सिखाती हैं,
साधन न होते हुए भी सुख-दुख में
एक-दूसरे के काम आना सिखाती है
शहरों में सड़क किनारे फुटपाथ पर सोना
सोते समय सीने पर गाड़ी का चढ़ जाना
अकाल मृत्यु के गाल में समा जाना
भूखे पेट कई दिन-रात जागते रहना
अब हमसे यह सब नहीं होना
प्रेमचंद सौ साल पहले
गोदान में गोबर के माध्यम से हमें बता
गये थे
पर हम तब भी समझ नहीं पाये थे।
हम अपने को ही सही समझ रहे थे।
जमाना बदल गया है
स्थितियाँ बदल गई हैं
अब हमको 'गोबर' नहीं बनना पड़ेगा
पर हमको क्या पता था
'गोबर' से बड़ा गोबर हमको बनना पड़ेगा
अब हम फिर वापस जा रहे हैं अपने गाँव
नहीं मिली यहाँ हमको कहीं ठाँव।
माना कि गाँव में भी अभी बहुत सी कमियाँ हैं।
पर अब हमारा गाँव ही अब हमको स्वर्ग ल गता है।
तमाम कमियों के बावजूद भी अपवर्ग ल गता है।
अब हमको हमारा गाँव ही नजर आ रहा है।
आखिर अन्तिम आश्रय स्थल तो हमारा गाँव ही है।

जीत की हार

अम्मा पाँच पूतों वाली माँ थीं। उनकी खुशी का ठिकाना न था। अपने सास-ससुर की इकलौती बहू थीं। उनका बड़ा लाड़-दुलार था। बहुत मेहनती थी। सारा काम अकेले कर लेती थीं। बच्चे धीरे-धीरे बड़े हो रहे थे और सास-ससुर बुढ़ापे की ओर बढ़ रहे थे, शरीर जर्जर हो रहा था। अम्मा-काका के काम में सबसे अधिक हाथ बटाता था बड़ा बेटा राम सेवक। जैसे ही उसकी उम्र 15-16 हुई थी, वह खेती संभालने लगा था। इसीलिए उसकी पढ़ाई भी छूट गई थी। पहले खेती का काम करता, मौका मिल ने पर स्कूल पढ़ने भी जाता था। लेकिन धीरे-धीरे खेती की जिम्मेदारी बढ़ने लगी, खेती में अधिक व्यस्त रहने लगा और पढ़ाई से दामन छूटता गया। काका अनपढ़ थे। कोर्ट कचहरी के भी बहुत से केस चल रहे थे। खेती जोतने को आधी मिली थी लेकिन लगान दोगुनी देनी पढ़ती थी। इसलिए खेती पर दीवानी का मुकदमा लड़ रहे थे। बड़ा बेटा कक्षा 8 तक पढ़ चुका था। इसलिए वह चिट्ठी-पत्री, जरूरी कागज सब स्वयं पढ़ लेता था और जान लेता था कि क्या करना है। इससे काका को बहुत सहारा मिल रहा था। बड़े भाई के बाद एक बहन थी उसके बाद चार छोटे भाई थे। अम्मा अकेली थीं काम करने वाली इसलिए इस चक्कर में थीं कि बड़े बेटे की शादी जल्दी कर लें तो हाथ बँटाने के लिए घर में बहू आ जायेगी। बहू के घर आते ही खाना बनाने खिलाने से छुट्टी मिल जायेगी। एक रिश्तेदारी में भी वृद्धि होगी। वे लोग भी सहायता करेंगे। गाँव में हमारी धाक बढ़ जायेगी।
अम्मा ने बड़े बेटे का ब्याह बड़ी धूम-धाम से रचाया था। पहला बेटा था। अम्मा के भी बहुत सारे अरमान थे। अम्मा की शादी तो पवपुजी हुई थी। क्योंकि उस समय लड़की की शादी के लिए लड़की के पिता न ही खर्च करने में ही समर्थ होते थे और न ही ऐसी विचारधारा रखते थे। लड़के वालो को ब्याहने के लिए अपने घर दरवाजे पर बुलाने पर लड़की के पिता को काफी खर्च करना पड़ता था। उस समय के पिता लोग पुत्री के ब्याह पर इतना खर्च करना मुनासिब नहीं समझते थे। अम्मा के पिता जी भी इसी तरह में से थे इसीलिए उन्होंने भी दरवाजे पर बारात नहीं बुलाई। अम्मा के मन में साध थी कि मैं अपने बेटे का ब्याह उसी घर में करूँगी जिस घर में ब्याहने को बुलाया जायेगा। अन्ततः एक लड़की के साथ बात पक्की हो गई। वह लड़की अकेली थी नाम था शीला और एक भाई था सूरज। उसके पिता जी सहर्ष दरवाजे पर बारात बुलाने को राजी हो गये। अम्मा ने बड़े बेटे की शादी खूब धूम-धाम से की। शादी में हाथी, घोड़े भी गये। लड़का शामियाना में दूल्हा बनकर गया। लड़की के पिता ने दान-दहेज भी खूब दिया। काका इतनी धूमधाम से ब्याहने गये थे जैसे कि उनके अधूरे अरमान पूरे हो गये हों। उनकी शादी में जो कसर रह गयी थी, वह बेटे की शादी में पूरी हो गयी हो। घर, परिवार एवं रिश्तेदार सभी लोग बहुत प्रसन्न थे।
तीन साल बाद बेटे का गौना लाया गया। बड़ी बहू की डोली ससुराल पहुँची। बहू का भव्य स्वागत किया गया। रीति रिवाज के अनुसार बहू को डोली से उतारने के लिए जो परछनी साड़ी मायके से आई थी अम्मा शीघ्रता से उस साड़ी को पहन आयी और बहू को परछने लगी। सबसे पहले सूप से परछ कर आरती उतारीं। ग्रामीण मलिलाएँ जो सब इकट्ठी हुई थी वे सब तुरन्त परछनी का गीत गाने लगी 'सुपवा ले बउहरि सुपवा ले सुपवा सपूरन हो। थेरिया जे परहीं सजन घर अब सुख करहीं'। इसी तरह अम्मा ने मूसर, लोढ़ा, लोटा में हींग डालकर आरती उतारी। अन्त में आँचल से परछते हुए आशीष पूर्वक बहू को डोली से उतारा। डोली से उतरते ही बहू को देखने का क्रम शुरू हो गया। बच्चे तथा महिलायें बहुत उत्सुक थे। उन्होंने सिर से लेकर पैर तक निहारना शुरू कर दिया। सबसे पहले पैर दिखा। कहना शुरू कर दिया कि बहू का रंग सावला लगता है। इसके पहले बहू को किसी ने देखा नहीं था। अम्मा ने बड़े अरमान से खुद ही बहू को ड़ोली से उतारा। नाउन को दूर हटा दिया। बहू को कदम-कदम पर चलने के लिए पतरी बिछा दी उस पर कदम रखते हुए बहू चौखट की तरफ बढ़ी।
चौखट के भीतर अनाज से भरा हुआ कुरवा रख दिया गया और बहू से कहा कि इस तरह पैर से मारो कि कुरवा लुढ़ककर गिर जाये ताकि तुम्हारे जीवन में हमेशा धनधान्य भरा रहे। बहू ने वैसा ही किया। फिर आगे आटे की लोई बनाकर रख दिया कि उस पर कदम रखते हुए घर में जहाँ भगवान की मूर्तिया रखी हैं वहां तक जाओ। फिर बहू ने वैसा ही किया और भगवान को प्रणाम किया। इस बीच महिलाओं और बच्चों में उत्सुकता बनी रही कि बहू साँवली है या गोरी। बहू का हाथ देखा तो आभास होने लगा कि बहू साँवली ही है। फिर सब के जुबान से एक ही शब्द निकलने लगा कि बहू साँवली है गोरी नहीं है। अम्मा के मन में दुन्दभि बजने लगी कि मैं तो सोची थी कि बहू गोरी आयेगी पर यह तो साँवली निकली। अम्मा के मन को अब बातें रास नहीं आ रही थी। फिर भी कार्यक्रम चलता रहा। अम्मा का मन खट्टा होने लगा। बहू का रंग साँवला जरूर था पर समय के साथ धीरे-धीरे यह स्पष्ट होने लगा कि बहू का व्यवहार बहुत अच्छा है। बहू सुशील है। संस्कारशील घराने की है। काम काजी है। सब काम आसानी से कर लेती है।
धीरे-धीरे समय बीतता गया। अम्मा की नफरत बढ़ने लगी। अम्मा अपनी खीस अब उसके काम काज में निकालने लगीं। महिलाओं का जैसा स्वभाव होता है उनके कार्यक्षेत्र के अनुसार कि खाना बनाने में कमी निकालना, घर की सफाई में कमी निकालना, अम्मा वहीं सब करने लगीं। बहू चाहे जितना मेहनत करती थी पर अम्मा को पसन्द नहीं आता था। अम्मा बहू से धान कुटवाती, गेहूँ पिसवाती, दाल दरवाती, भूजा भुजवाती। बहू सब कुछ अच्छे से करती पर अम्मा को जरूर काम में कोई न कोई कमी नजर आ जाती। जितना भी अच्छा खाना बहू पकाती पर अम्मा को रास न आता। अम्मा कभी कहती रोटियाँ कच्ची हैं, कभी कहती जल गई हैं, कभी कहती दाल में लहसुन मिर्चा से जो छौक ल गाई है मिर्चा जल गया है, लहसुन पका ही नहीं है इसलिए दाल में महक ही नहीं आ रही है। कभी कहती भात कच्चा है, पका नही है, कभी कहती भात गीला है। सब्जी में कोई स्वाद ही नहीं है इत्यादि कथन अम्मा का चलता रहा। बहू के सिर से पानी जाने लगा।
उसकी सहनशक्ति जवाब देने लगी। इसी बीच बहू के भाई लेने के लिए और बहू मायके चली गई।
इधर अम्मा अब अपने बड़े बेटे पर दबाव बनाने लगी कि बहू को दुबारा घर में नही लाना है। उसे छोड़ देना है क्योंकि बहू गोरी नही है काली है। बड़े बेटे को बहुत जोर का धक्का लगा। वह जिस माँ को अभी तक आदर्श की दृष्टि से देखता था उसमें अब कमी नजर आने लगी। पिता का भी दृष्टिकोण माता के ही साथ था। बेटे के मन में बात टकरायी कि बहू साँवली है तो इसमें उसका क्या दोष है ? यह तो प्रकृति ने बनाया है। प्रकृति की बनायी हुई कोई भी चीज इस संसार में खराब नही है। अपनी जगह सब अच्छी है और सुन्दर है। बेटे ने मन में निश्चय कर लिया कि अम्मा काका की सभी बातें मानेगा, अम्मा का सदा आदर करेगा, उनकी सेवा करेगा लेकिन बहू को छोड़ने के मामले में माता-पिता की बात नहीं मानेगा। बड़ा बेटा अम्मा की बात से सहमत नहीं हुआ और अपनी राय जाहिर कर दी कि बहू तो वही घर में आयेगी। बेटा आदर्शवादी था। उसने कहा मैं दूसरी शादी कतई नहीं करूँगा।
अब अम्मा और बेटा में बड़ी बहू को लेकर संघर्ष तेज हो गया। बेटा बहू को लाकर अपना आदर्श निभाने का प्रयत्न करने लगा। इस बीच बहू के दो बच्चे हुए एक बेटा और एक बेटी। ननद भी हमेशा अम्मा के साथ ही रहती थी। फिर भी बड़ी बहू अपना उत्तरदायित्व भली प्रकार निभाने का प्रयत्न करती। अन्य चार बेटों की भी शादियाँ हुई। सभी बहुओं का आगमन हुआ। अम्मा सबसे ज्यादा छोटे को मानती थी। छोटी बहू सुनीता से अम्मा को बहुत उम्मीदें थी। छोटी बहू के आ जाने पर अम्मा और भी इतराकर बड़ी बहू से लड़ाई लड़ने लगी। उसको सताने लगी। समय पर खाना नहीं देती थी। सारी मलिकई छोटी बहू से करवाती थी। बीच की बहुएँ भी सामंजस्य बनाती रही। बड़ी बहू की दवा नहीं हो पायी। धीरे-धीरे उसका स्वास्थ्य खराब होता गया। वह क्षयरोग से पीड़ित हो गई। अन्ततः असमय इस दुनिया से चल बसी।
बड़ी बहू के खत्म होने का अम्मा को जरा भी खेद न था। वह तो काली बहू से छुटकारा चाह ही रही थीं सो इस रास्ते से उन्हें छुटकारा मिल गया। पर एक समर्पित काम करने वाला व्यक्तित्व भी चला गया। काम को लेकर परिवार में लड़ाई बढ़ने लगी। अम्मा हमेशा छोटी बहू के बचाव में रहती। छोटी बहू से सेवा करवाने को कौन कहे बुढ़ापे में भी उसकी सेवा खुद करती रहतीं। उसके चाय लातीं, नाश्ता लातीं, बिस्तर बिछातीं। उसके बच्चे के लिए दूध लातीं। अम्मा छोटी बहू का दिल जीतने के लिए कोई कोर कसर नहीं छोड़ीं। अम्मा सोची की छोटी बहू का दिल जीत लूँगी तो बुढ़ापे में अन्तिम समय में वही सेवा करेगी और सास के रूप में मैं विजयी हो जाऊँगी। अम्मा जितना ही छोटी बहू का दिल जीतने का प्रयत्न करतीं छोटी बहू उतना ही उनसे दूर भागती थी। छोटी बहू गोरी भी थी इसलिए अम्मा को ज्यादा पसंद आती थी। पर छोटी बहू बहुत स्वार्थी और चालाक थी। कोई कटु उत्तर नहीं देती लेकिन कोई काम नहीं करती थी। उसने मन में ठान लिया था कि सास चाहे जितना प्रयत्न करें लेकिन उसे सेवा नहीं करनी है। सेवा करेंगे तो दर्द पैदा होगा और चार लोगों से कहेगे कि हमने सास की बहुत सेवा की है। लोग कहेंगे कि सेवा किया तो अपनी सास का किया क्या किसी पराये की सेवा कर दी ? यह तो तुम्हारा दायित्व था। न सेवा करो न किसी से कहने की नौबत आये कि हमने सेवा किया पर ऊपर से दिखावा जरूर करते रहो कि मैं सास की बहुत प्यारी बहू हूँ। वे मुझे बहुत मानती है। मैं उनकी बहुत सेवा करती हूँ। अम्मा ये बातें सुनकर गदगद हो जाया करती थीं कि बहुत अच्छी बहू है।
अम्मा एक दिन सुबह सोकर उठीं। खड़ी हो रही थी कि ठीक से खड़ी नहीं हो पायी। पैर लड़खड़ा गये और गिर पड़ी। बुढ़ापे का शरीर था। जाँघ की हड्डी टूट गयी। अम्मा दर्द से कराहने लगीं। बड़े बेटे को आवाज सुनाई पड़ी। अन्दर आये तो अम्मा को इस हाल में देखा। अम्मा को उठाया गया। परिवार के सभी लोग दौड़कर आये। डॉक्टर के यहाँ ले जाने की तैयारी होने लगी। दर्द होने के बावजूद अम्मा मन ही मन संन्तुष्ट थी कि मेरे पाँच बेटे और बहू हैं। मेरी सेवा जरूर होगी। डॉक्टर के यहाँ ले जाया गया। जाँघ की हड्डी का आपरेशन हुआ। अम्मा को अब लम्बे समय तक बिस्तर पर रहना था। अब समस्या आई की अम्मा की देखभाल कौन करेगा। सभी तो अपने अपने काम में व्यस्त होना चाहते थे। अम्मा को अब सबसे अधिक आस छोटी बहू से ही थी। छोटी बहू को भी घबराहट और चिन्ता सता रही थी कि अम्मा की सेवा कैसे करूँगी। किसी तरह छुट्टी मिल जाये कि सेवा न करनी पड़े। दूसरी, तीसरी और चौथी बहू यह सोच रही थी कि जीवन भर अम्मा छोटी बहू को मानती रही। हमें तो मानती नहीं थी अब छोटी बहू सेवा करे। अम्मा को अस्पताल से घर लाया गया। धीरे-धीरे अम्मा की सेवा में कमी आने लगी। शुरू-शुरू में परिवार के सभी सदस्य सुन लेते थे पर अब सुनकर भी अनसुना कर देते थे। अम्मा को अब खल ने लगा।
अम्मा ने छोटे बेटे और बहू को बहुत अधिकार और प्यार से पास बुलाया। अधिकार भी जताया। बेटे से कहा मैने जीवन भर तुम्हें दूध, दही और घी खिलाया। तुम्हारे काका को भी नही देती थी लेकिन तुम्हारे लिए जरूर रखे रहती थी। तुमको बहुत माना है। मेरा ध्यान रखा करो। मुझे तकलीफ में मत छोड़ो। बेटा आश्वासन देता रहा है, माँ जरूर करेंगे पर करता कुछ नहीं था। समय पर दवा भी नहीं लाता था। छोटी बहू खाने पीने का बिल्कुल भी ध्यान नहीं रखती थी। अम्मा का शरीर निःशक्त होने लगा। अन्य तीनों बहुएं भी नहीं सुनती थी। अन्त में हारकर अम्मा ने छोटी बहू से अनुनय-विनय किया कि मेरी सेवा कर दिया करो। बहुत कष्ट होता है लेकिन छोटी बहू न तो जवाब देती थी और न ही कुछ करती थी। छोटी बहू अपने बच्चों का बहुत ध्यान रखती थी। उस समय दो छोटे बच्चे थे एक बेटा और एक बेटी। अम्मा जब छोटी बहू को देखती थी कि अपने बच्चे को दूध पिला रही, है फल खिला रही है तो सोचती थीं कि उन्हें भी दे दे। सीधे तौर पर अम्मा ने छोटी बहू को कहा था कि जैसे तुम अपने बच्चों का ध्यान रखती हो, खिलाती ही हो ,पिलाती हो वैसे मेरा भी कर दिया करो। हमने भी बेटे को जिन्दगी पर पाला है पोशा है तब इतना बड़ा हुआ है तब तुम आकर राज कर रही हो। छोटी बहू सुन लेती पर जवाब कुछ न देती। अन्ततः अम्मा का मन हारने लगा। अम्मा जीवन भर इसी दिखावे में जीती रही कि मैं पाँच पूतों वाली माँ हूँ और सभी बहुएं मेरा कहना मानती है। मैं सभी पर शासन करती हूँ। मेरी इच्छा के बिना कोई भी बहू कुछ नहीं कर सकती है। पर समय के साथ अपने दावे स्वयं को झूठे ल गने लगे।
अम्मा का अन्तिम समय करीब आ गया था। इसका अहसास अम्मा को होने लगा था। अन्तिम सांस लेने से पहले छोटी बहू को बुलाकर अम्मा ने कहा- बड़ी बहू ने मेरी बहुत सेवा की। वह मेरा दिल जीतना चाहती थी लेकिन मैं उसको समझ न सकी। उसका रंग साँवला था इसलिए नफरत की आग मेरे दिल में भरी थी। मैं उसको अपना न सकी। उसकी दवा भी नहीं होने दी जिससे वह असमय ही इस संसार से चल बसी। मैं तुम्हारा दिल जीतना चाहती थी। जीवन भर दिलोजान से तुम्हें चाहती रही। तुम्हारा दिल जीतने के दावे करती रही पर अन्ततः मैं तुमसे हार गयी।

डॉ रतन कुमारी वर्मा की पुस्तकें